CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संस्कृत प्रदीपः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संस्कृत-प्रदीपः

Gopal Krishna.

VIII. A.

द्वितीयालोकः

C. R. S. T. Inter College. N. T.

लेखक : सम्पादक :

श्री पण्डित करुणापति त्रिपाठी

शास्त्राचार्य, एम० ए०, बी० टी० .

प्रोफेसर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी

Shri Haribamsha Prasad Upadhyay Baskota,
श्री हरिबंश प्रसाद उपाध्याय बास्कोटा,
Ishwariniwas, Nepalganj, (Banke),
ईश्वरी निवास, नेपालगंज, (बाँके)
P.O. RUPAIDIHA, Dist. Bahraich, (U.P.)

प्रकाशक :

शक्ति कार्यालय,

इलाहाबाद

सप्तत्राणकाः

मूल्यम् ।≡)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुद्रक—बालकृष्ण शास्त्री,
ज्योतिष प्रकाश प्रेस, विश्वेश्वरगंज, बनारस। २४४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निवेदन

भारत की सांस्कृतिक विद्या होने पर भी जहाँ एक ओर सारे संसार में दिन पर दिन संस्कृत का अध्ययन बढ़ता जा रहा है वहीं भारत में उसके प्रति छात्रों की उदासीनता बढ़ती जा रही है। छात्र संस्कृत को बहुधा हौवा समझकर उससे दूर रहना चाहते हैं। अनेक पाश्चात्य ढंग की पाठशालाओं और विद्यालयों के संस्कृत अध्यापक छात्रों की कमी का रोना रोते सुनाई पड़ते हैं।

अतः यह स्पष्ट है अंग्रेजी-स्कूलों में संस्कृत की पढ़ाई लोकप्रिय नहीं हो पा रही है। उसका एक सर्व-प्रमुख कारण आरम्भिक कक्षाओं में संस्कृत का पठन-पाठन है। इन कक्षाओं में जो पाठ्य-पुस्तकें बहुधा पढ़ाई जाती हैं, वे शिक्षा-मनोविज्ञान और बाल-मनोविज्ञान को ध्यान में रखकर नहीं लिखी गई हैं। इसी कारण उनका अध्यापन मनोवैज्ञानिक ढंग से नहीं हो पाता। अध्यापक भी छात्र-प्रिय नहीं हो पाते।

संस्कृत को लोक-प्रिय बनाया जा सकता है। यह भाषा भारत की सभी आर्यभाषाओं की जननी है। हिन्दी के साथ तो उसका इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है कि यदि संस्कृत पढ़ाने में थोड़ी सी सावधानी बरती जाय तो हिन्दी भाषा-भाषी छात्र बहुत शीघ्र संस्कृत सीख ले सकते हैं। भारत के प्राचीन संस्कृत पंडितों की जो पाठन-पद्धति है, वह सूत्र प्रणाली है। उस ढंग से पढ़ाने पर बोध तो ठोस होता है, किन्तु वह बालमनोविज्ञान के प्रतिकूल है। बालक उस पद्धति को पसन्द नहीं करते।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि व्याख्यात्मक वाक्य-शिक्षण-प्रणाली के अनुसार संस्कृत की शिक्षा दी जाय और शिक्षण के साथ-साथ हिन्दी भाषा का अन्तर्योग रहे तो प्रयोग बहुत तीव्र होगा। जिन हिन्दी शब्दों से बालक का परिचय है उन्हीं से मिलते-जुलते संस्कृत के शब्दों का प्रयोग अधिक मनोवैज्ञानिक होता है। बालक को भी कठिनाई नहीं पड़ती। इसी पद्धति का प्रस्तुत पुस्तक में अनुसरण हुआ है।

पर इसके साथ-साथ यह भी ध्यान में रखा गया है कि पाठ के विषय भी ऐसे हों, जो बालकों के परिचित हों, जिनके बारे में वे जानते हों, जिनके संबंध में वे हिन्दी में कुछ कह-सुन सकते हों। प्रस्तुत पुस्तक में पाठों की योजना इन मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों को लेकर हुई है।

आरम्भ के कुछ पाठ ऐसे हैं जिनसे बालक बिना संस्कृत पहले पढ़े, समझना-बोलना सीखने लगते हैं। लिङ्ग, वचन, विभक्तियों और पुरुषों का क्रमिक परिचय होता चलता है। वाक्य-रचना-शैली से वे परिचित होते चलेंगे, छोटे-छोटे वाक्य बनाने लगेंगे और बिना व्याकरण पढ़े व्याकरणानुसारी प्रयोग में अभ्यस्त हो जाएँगे।

व्याकरण की शिक्षा सूत्रप्रणाली द्वारा छात्रों को देना अमनोवैज्ञानिक है। भाषा का ज्ञान, परिचय और व्यवहार या प्रयोग से होता है, केवल नियम रटने से व्यवहारिक ज्ञान नहीं होता। यही ध्यान यहाँ भी रखा गया है। परिचय, प्रयोग और व्यवहार से बालक व्याकरण के नियमों से परिचित होते चलेंगे। यह अध्यापक का कार्य है कि उनसे बालकों का पर्याप्त परिचय होने पर उचित अवसर पर उन्हीं उदाहरणों के आधार पर नियम स्थिरीकरण की व्यवस्था करें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यवहार और प्रयोग की पद्धति सक्रिय हो सके, इसी कारण आरंभिक पाठ व्यवहार—(डाइरेक्टर) प्रणाली के सिद्धान्तों का अनुकरण करते हैं। भाषा की शिक्षा प्रश्नोत्तर द्वारा होना चाहिए। प्रश्नोत्तर भी खूब होना चाहिए। और ये प्रश्नोत्तर परिचित विषय पर हों। इन दोनों बातों का ध्यान रखा गया है। इसी कारण आरंभिक पाठों में चित्र भी दिए गए हैं। प्रथम आलोक में इन आरंभिक बातों की ओर विशेष ध्यान दिया गया है।

प्रत्येक पाठ प्रायः पाँच अंशों में विभाजित है। आरम्भ में पाठ्य शब्द दिए गए हैं। देखने में अधिक लगने पर भी वे शब्द बहुधा ऐसे हैं जो हिन्दी के अधिक निकट और बालकों के परिचित हैं। अतः आधिकता भार न हो सकेगी।

दूसरा अंश मुख्य पाठ का है। इसमें सरल और बालोपयोगी संस्कृत की सहायता ली गई है।

तीसरा अंश प्रश्नों का है। बालक पुस्तक के शब्दों का भाव समझें और भाषा का शुद्ध प्रयोग करें, अपने भावों को अभिव्यक्त करने की चेष्टा करें—इसी उद्देश्य से प्रश्न संकलित किए गए हैं। विद्यार्थी जो उत्तर दे, उसे समझ-बूझ कर तब दे, जिससे भाषाज्ञान के साथ उनकी बोधवृत्ति और कल्पनाशक्ति का विकास हो।

चौथा अंश अभ्यास का है। अभ्यास में अधिकतः अनुवाद पर जोर दिया गया है। अनुवाद ऐसे अवश्य हैं जिनमें विभक्तियों और कालों के प्रयोग का अभ्यास होता चले। इसके अतिरिक्त वाक्यपूर्त्ति, शब्द-प्रयोग, वाक्य-रचना आदि भी अभ्यासांश हैं। पाँचवाँ अंश व्याकरण का है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्याकरण के ज्ञान में सहायक शब्द-रूपों को भी पाठों के साथ ही दिया गया है। बहुधा उन शब्दों और धातुओं के ही रूप पाठों में दिये गये हैं जो पाठों में आए हैं। धातुरूपों का क्रम धातुओं के अनुसार न चलकर पाठानुसार है। जिस पाठ में जिस काल या प्रयोग का उपयोग हुआ है, उस काल के एकानेक धातुओं के रूप एकत्र दिये गए हैं। धातुरूपों के एकत्र रहने से छात्र को तुलनात्मक ढंग से कंठस्थ करने में सहायता मिलेगी।

आरम्भिक पाठों में सन्धि नहीं दी गई है। आगे चलकर प्रथम आलोक में सामान्य स्वर-संधियों का प्रयोग हुआ है। द्वितीय भाग में उन संधियों का प्रयोग अधिक हुआ है जो प्रथम आलोक में पढ़ाई जा चुकी हैं।

अन्त में कंठस्थ कराने के लिये शिव, विष्णु आदि की स्तुति के कुछ श्लोक भी दे दिए हैं।

आशा है, प्रस्तुत पुस्तक द्वारा आरंभिक कक्षाओं में संस्कृत की छात्र-प्रियता बढ़ाई जा सकेगी। उनके मन का हौवा दूर होगा, उनकी सांस्कृतिक चेतना परिशुद्ध होगी एवं संस्कृत का लोक-प्रिय भाषा के रूप में प्रचार और प्रसार बढ़ेगा।

अध्यापकों से

यदि अध्यापक नीचे लिखी बातों की ओर पढ़ाते समय अधिक ध्यान रखें तो पाठन अधिक उपयोगी हो :—

छात्रों की अवस्था, उनका मानसिक स्तर, उनकी बोधशक्ति का सामर्थ्य, उनकी कल्पना-शीलता तथा उनकी रुचि का ध्यान सदा रखना चाहिए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुस्तक पढ़ाते समय छात्रों के सच्चे हित की दृष्टि से पाठन-प्रणालियों में अवसरानुसार परिशोधन, परिवर्त्तन आदि किया जा सकता है। क्यों कि प्रणाली बाल-शिक्षण के लिये है। बालक शिक्षण-प्रणाली के लिये नहीं है।

चित्रों के सहारे, व्यवहार-प्रणाली (Direct method) के अनुसार आरंभिक कक्षा में आरंभिक छ-सात पाठ पढ़ाए जायँ। धीरे-धीरे अनुवाद प्रणाली का सहारा लिया जाय। आवश्यकतानुसार उसका भी उपयोग किया जा सकता है।

शब्दों की और वाक्यों की आवृत्ति और पुनरावृत्ति आरंभिक अवस्था में अधिक से अधिक होनी चाहिए। अध्यापक उच्च और श्रव्य रीति से पाठों को सस्वर पढ़ें। समवेत ढंग से पहले और फिर व्यक्तिगत रूप से पाठ पढ़ाए जायँ। शब्दों और वाक्यों की आवृत्ति दो-तीन बार अवश्य कराई जाय। प्रश्नों के उत्तर में भी बालक पाठ में से ढूँढ़-ढूँढ़कर उत्तर दें। तात्पर्य यह कि बालक को संस्कृत बोलने का अधिक से अधिक अवसर देना चाहिए। स्वयं अध्यापक कम बोले। छात्रों के उच्चारण की शुद्धता पर भाषा की व्याकरण-शुद्धि से भी अधिक ध्यान देना चाहिए। उच्चारण में अशुद्धि न होने पाए।

अभिनय, वस्तु, रेखा-चित्र, प्रतिमान आदि के द्वारा क्रिया, संज्ञादि का अर्थ बिना हिन्दी-पर्याय बताए समझाने का प्रयास करना चाहिए। जहाँ कठिनाई अधिक हो वहाँ अनुवाद से भी काम लिया जा सकता है।

संस्कृत की कक्षा में अधिक से अधिक बातचीत संस्कृत में ही होनी चाहिए। आज्ञा, आदेश—जैसे लिख, पठ आदि में संस्कृत का उपयोग हो। प्रश्न पूर्ण वाक्य हों, छात्रों के उत्तर भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्ण वाक्य में हो इसका ध्यान रखना चाहिए। प्रश्न भी ऐसे हों जो छात्र आसानी से समझ लें और उत्तर भी उनका दे सकें।

पाठों को रोचक और मनोहर बनाना चाहिए। पाठनशैली रूखी न हो। यदि विषय में रस की कमी हो तो पाठनशैली से उसे सरस बना देना चाहिए।

एक छात्र का उत्तर अशुद्ध होने पर पुनः दूसरे-तीसरे छात्र से उसे शुद्ध करवाना चाहिए। स्वयं भी आवश्यक होने पर सहायता दे देनी चाहिए। उत्तर भी एकानेक छात्रों से दुहरवाने में लाभ होता है। समवेत आवृत्ति भी होनी चाहिए।

संधि के नियम व्याख्याप्रणाली के अनुसार अध्यापक पढ़ाएँ। उदाहरणों से पूर्ण परिचय हो जाने के बाद तब उन्हीं के आधार पर नियम निकलवाए जायँ। समासों के संबंध में भी यही व्यवस्था चलेगी।

अध्यापक विभक्तियों के अर्थ और प्रयोग पाठ के आरम्भ से ही छात्रों को बताता चले। पर उसकी शिक्षा व्याख्यात्मक होनी चाहिए।

विश्वास है कि इस विधि से यदि अध्यापन चले तो संस्कृत-शिक्षण छात्रों और जनता में अधिक प्रिय हो सकेगा।

—संपादक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय-सूची:

प्रथमः पाठः	कुरुक्षेत्रम्	१
द्वितीयः पाठः	वाल्मीकेः रामायणरचना	५
तृतीयः पाठः	बुद्धिः यस्य बलं तस्य	११
चतुर्थः पाठः	गुरुकुलम्	१७
पंचमः पाठः	पम्पा-वर्णनम्	२२
षष्ठः पाठः	प्रत्युत्पन्नमतिः वानरः	२६
सप्तमः पाठः	उत्तमानि रत्नानि	३१
अष्टमः पाठः	महामनाः मालवीयः	३६
नवमः पाठः	उपदेशामृतम्	४४
दशमः पाठः	प्रयागे कुम्भस्य पर्व	४७
एकादशः पाठः	दिलीपस्य गोसेवा	५०
द्वादशः पाठः	जन्तुशाला	५६
त्रयोदशः पाठः	भगवान् बुद्धः	६१
चतुर्दशः पाठः	देव्याः दूतस्य च संवादः	६७
पंचदशः पाठः	महाराणाप्रतापः	७१
१६ श्लोकाः—		७६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रथमः पाठः

कुरुक्षेत्रम्

पाठ्याः शब्दाः—युद्धस्थले, पताका, भगवान्, भगवन्तम्, समवेतान्, सीदन्ति, स्रंसते, परिशुष्यते, काङ्क्षे, जीवितेन, सशरं चापम्, निष्कासः, विश्वविश्रुता, उपदेशवाणी।

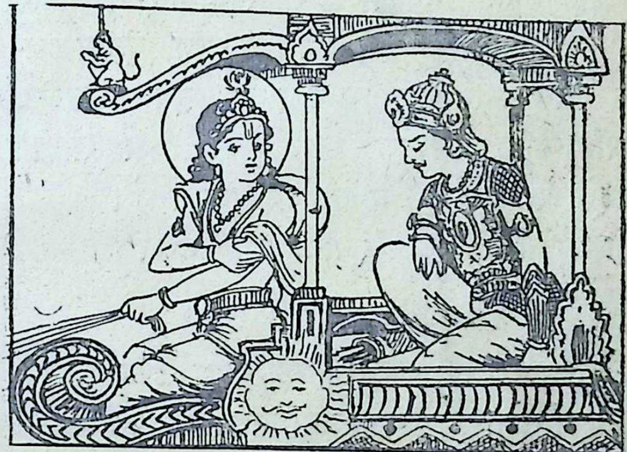

गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्

कुरुक्षेत्रस्य युद्धस्थलेऽयं रथः तिष्ठति। श्रीकृष्णः सारथिरिव इमं रथं चालयति। सः अर्जुनस्य सुहृद् अस्ति। रथेऽर्जुनः, उपविशति। रथस्योपरि पताका वर्तते। कौरवैः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सह, तस्य सेनया च सह योद्धुं पाण्डवमध्यमः अर्जुनः समागतोऽस्ति।

इहागत्य अर्जुनः स्वसुहृदं भगवन्तं कृष्णं प्रोवाच—"हे अच्युत, स्थापयतु मे रथं द्वयोः सेनयोः मध्ये। पश्यामि तावत् युद्धकामान् शत्रून्, तेषां च सहायकान्।" इति। भगवान् तथैव करोति।

दृष्ट्वा च तत्र समवेतान् शत्रून् तत्पक्षीयान् समागतान् स्वबन्धून् च अर्जुनः कथयति—"भगवन् कृष्ण, युद्धाय इहागतान् इमान् सर्वान् स्वजनान् दृष्ट्वा मम अङ्गानि सीदन्ति, मुखं परिशुष्यति, शरीरं कम्पते, गाण्डीवं धनुः हस्तात् स्रंसते।

न काङ्क्षे विजयं कृष्ण! न च राज्यं सुखानि च।
किं नो राज्येन गोविन्द, किं भोगैः, जीवितेन वा॥
येषामर्थे काङ्क्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च।

ते सर्वे स्वजनाः बन्धवः सम्बन्धिनश्च इहैव योद्धुम् आगताः सन्ति। एषां हत्यया प्रयोजनं किञ्चिदपि न वर्तते। एते मां तावत् घ्नन्तु, किन्तु नाहं तान् हनिष्यामि। अनेन युद्धेन अधर्मस्य एव वृद्धिः भविष्यति" इति।

इत्युक्त्वा पार्थः सशरं चापं विसृज्य शोकाकुलोऽभवत्। तत् दृष्ट्वा भगवान् कृष्णः तस्मै उपदेशम् अददात्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"निष्कामो भूत्वा धर्मरक्षायै युद्धं कुरु" इति तमुपादिशत्। अर्जुनकृष्णयोः संवादः गीतायां सङ्कलितः वर्त्तते। इयं च गीता विश्वविश्रुता अस्ति। अनुपमा इयं भगवतः उपदेशवाणी। सर्वे गीतोपदेशम् मुहुर्मुहुः प्रशंसन्ति। गाँधिमहात्माऽपि गीतायाः परमभक्तः आसीत्। अयं ग्रन्थः सर्वेषां शास्त्राणां तत्त्वभूतोऽस्ति। सर्वैः भारतीयैः इयम्—

गीता सुगीता कर्त्तव्या

प्रश्नाः—अयं रथः कुत्र तिष्ठति। कः इमम् सारथिः इव चालयति। रथं कः उपविशति। अर्जुनः किमर्थम् अत्रागतः। सः कृष्णं किं कथयति। कान् दृष्ट्वा युद्धं कर्तुं नेच्छति। तस्य अङ्गस्य का अवस्था वर्त्तते। किं शुष्यति, किं कम्पते, किं हस्तवत् स्रंसते। कस्मात् अर्जुनः राज्यं विजयं च नेच्छति! केषां हत्यया किंचिदपि प्रयोजनम् नास्ति। शोकाकुलो भूत्वा सः किम् कृतवान्। कृष्णः किम् उपदेशं दत्तवान्। कुत्र ते उपदेशाः सङ्कलिताः सन्ति।

अभ्यास

(१) नीचे लिखे प्रश्नों का संस्कृत में उत्तर लिखो:—

अर्जुनस्य सुहृत् कः आसीत्। अर्जुनस्य सारथिः कः आसीत्। अर्जुनः किमर्थं युद्धभूमिम् अगच्छत्। कस्मात् अर्जुनः शरं चापं त्यक्तवान्। को ग्रन्थः विश्वविश्रुतः वर्त्तते।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(२) न काङ्क्षे विजयम्........सुखानि च इत्यादि तीन पंक्तियों का हिन्दी में अनुवाद करो।

रथेऽर्जुनः = रथे + अर्जुनः

युद्धस्थलेऽयम् = युद्धस्थले + अयम्

समागतोऽस्ति = समागतो + अस्ति

शोकाकुलोऽभवत् = शोकाकुलो + अभवत्

नियम— किसी पद के अन्त में वर्त्तमान एङ् (ए ओ) के बाद ह्रस्व 'अ' के आने पर उसका पूर्व रूप हो जाता है (एङः पदान्तादति)।

शब्दरूपाणि—

दकारान्तः पुँल्लिङ्गः सुहृद्-शब्दः।

एक०	द्वि०	बहु०	
सुहृत् (सुहृद्)	सुहृदौ	सुहृदः	(प्र०)
सुहृदम्	,,	,,	(द्वि०)
सुहृदा	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्भिः	(तृ०)
सुहृदे	,,	सुहृद्भ्यः	(च०)
सुहृदः	,,	,,	(पं०)
,,	सुहृदोः	सुहृदाम्	(ष०)
सुहृदि	,,	सुहृत्सु	(स०)
हे सुहृत्, हे सुहृद्	हे सुहृदौ	हे सुहृदः	(सं०)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्त्तमाने (लट्)

	एकव०	द्विव०	बहुव०	
स्था (तिष्ठ्)	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति	(प्र० पु०)
	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ	(म० पु०)
	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः	(उ० पु०)
उप (विश्)	उपविशति	उपविशतः	उपविशन्ति	(प्र० पु०)
	उपविशसि	उपविशथः	उपविशथ	(म० पु०)
	उपविशामि	उपविशावः	उपविशामः	(उ० पु०)

द्वितीयः पाठः

वाल्मीकेः रामायणरचना

पाठ्याः शब्दाः—पवित्रसलिला, कृताश्रमः, वीणापाणिः, देवर्षिः, त्रिकालज्ञः, सुखासीनम्, साम्प्रतम्, जितेन्द्रियः, दशरथतनयः, अभिषेकार्थम्, गच्छन्, विद्धम्, करुणं क्रन्दनम्, द्रुतचेतसः।

अस्ति भारते आर्यावर्त्तो नाम पुण्यो भूभागः हिमविन्ध्ययोः मध्ये स्थितः। तत्रार्यावर्त्ते तमसा नाम पवित्रसलिला नदी अस्ति। तस्यास्तीरे वल्मीकजातः प्राचेतसो नाम महर्षिः कृताश्रमः निवसति स्म। एकदा वीणापाणिः देवर्षिः त्रिकालज्ञः नारदः तत्र गच्छति स्म। वाल्मीकिः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुनेः नारदस्य अतिथिसत्कारं परमश्रद्धया कृतवान् । कुशा-सने सुखासीनं च तम् अपृच्छत्—"भगवन्,

को न्वस्मिन् साम्प्रतं लोके, गुणवान् , कश्चवीर्यवान् ।
धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढव्रतः ॥
चारित्रेण च को युक्तः सर्वभूतेषु को हितः ॥
विद्वान् कः कः समर्थश्च कश्चैकः प्रियदर्शनः ॥
तत् सर्वं श्रोतुमिच्छामि परं कौतुहलं हि मे ।

देवर्षे ! त्वं त्रिकालज्ञः सर्वज्ञश्चासि । त्वमेव जानासि एवं विधं नरम् । तत्कथय माम्" इति ।

नारदः तस्य कौतूहलं दृष्ट्वा अवदत्—

"शृणोतु मुने ! इक्ष्वाकुवंशे जातः रामनामा महा-पुरुषः अस्ति । महावीर्यः नियतात्मा द्युतिमान् धीरः नीति-मान् बुद्धिमान् श्रीमान् वाग्मी महाबाहुः पीनवक्षाः सर्वाङ्ग-सुन्दरः सर्वशुभलक्षणः उदारः त्यागी धार्मिकः दयाशीलः दुष्टनाशकः जितेन्द्रियः अन्यैश्च सर्वैर्गुणैः उपेतः दशरथ-तनयः रामचन्द्रः विराजते ।"

तदनन्तरं च नारदः रामस्य तपोवनगमनं, कानने मृगवधं, सीताहरणं, सुग्रीवमैत्रीं, वालिहननं, समुद्रतरणं,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लङ्कादाहनं, रावणादिविनाशनं, राज्यासने आरोहणादिकं चाकथयत्। वाल्मीकिश्च रामचरितवर्णनं श्रुत्वा परमं हर्षं प्राप्नोति स्म। संपूज्य च नारदं विससर्ज।

एकदा शिष्यैः सह अभिषेकार्थं तमसातटं गच्छन् वाल्मीकिः युग्मेन चरतोः क्रौञ्चयोः एकं व्याधस्य बाणेन विद्धं पृथिव्यां पतितं दृष्टवान्। श्रुतवान् च क्रौञ्च्याः विरहजं करुणं क्रन्दनम्। करुणया द्रुतचेतसः प्राचेतसस्य मुखात् सहसा कापि छन्दोमयी वाणी निर्गता—

"मा निषाद प्रतिष्ठात्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चयुगलादेकम्–अवधीः काममोहितम्॥"

स्वयं च लोके प्रथमां छन्दोमयीं स्वस्य कविताम् अशृणोत्। श्रुत्वा च स्वयमेव विस्मयम् अगच्छत्। ब्रह्मा च तमागत्य अकथयत्—

"वाक् ते आविर्भूता। रचय रामचरितम्" इत्युक्त्वा अन्तर्हितोऽभवत् पितामहः।

अथ महर्षिः वाल्मीकिः आदिकाव्यं नारदवर्णनानुसारं विरचितवान्। अतएव वाल्मीकिः आदिकविः इति विश्रुतः। तस्य कविता अनुपमा वर्त्तते। सर्वे तां प्रशंसन्ति।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्नाः—आर्यावर्त्तः कुत्रास्ति । तमसातटे कस्याश्रमः आसीत् । वाल्मीकिं कः अगच्छत् । नारदं वाल्मीकिः किमपृच्छत् । किंभूतं पुरुषं ज्ञातुं वाल्मीकेः कुतूहलम् आसीत् । तथाभूतं कं पुरुषं नारदः अवर्णयत् । रामस्य कां कथां नारदः अकथयत् । अभिषेकार्थं तमसा तटं गच्छन् वाल्मीकिः किम् अकथयत् । तन्मुखात् किं निरगच्छत् । पितामहः आगत्य किमकथयत् । वाल्मीकिः किम् अरचयत् ।

अभ्यास

(१) संस्कृत में अनुवाद करोः —

महर्षिनारद त्रिकालज्ञ थे । वाल्मीकि ने रामायण नामक आदिकाव्य बनाया । उन्हें नारदमुनि ने रामायण की कथा सुनाई । रावण को हराकर सीता के साथ वे अयोध्या आये । रामचन्द्र उन दिनों अयोध्या के राजा थे । उनके राज्य में बड़ी शान्ति थी । सारी प्रजा सुखी थी । सभी सच्चे और धार्मिक थे ।

(२) "कोन्वस्मिन्.........परं कौतूहलं हि मे" तक पद्यभाग का हिन्दी में अनुवाद करो ।

व्याकरणम्:—

(१) समासः—पवित्रसलिला—पवित्रं सलिलं यस्याः सा ।
कृताश्रमः—कृत आश्रमो येन सः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जितेन्द्रियः—जितानि इन्द्रियाणि येन सः ।

[अन्यपदार्थप्रधानः बहुव्रीहिः]

(२) शब्दरूपाणि

सकारान्तः पुल्ँलिङ्गः विद्वस्–शब्दः

एक०	द्वि०	बहु०	
विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः	(प्र०)
विद्वांसम्	,,	विदुषः	(द्वि०)
विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः	(तृ०)
विदुषे	,,	विद्वद्भ्यः	(च०)
विदुषः	,,	,,	(पं०)
,,	विदुषोः	विदुषाम्	(पं०)
विदुषि	,,	विद्वत्सु	(स०)
हे विद्वन्	हे विद्वांसौ	हे विद्वांसः	(सं०)

चकारान्तः स्त्रीलिङ्गः वाक्–शब्दः

वाक्, वाग्	वाचौ	वाचः	(प्र०)
वाचम्	,,	,,	(द्वि०)
वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः	(तृ०)
वाचे	,,	वाग्भ्यः	(च०)
वाचः	,,	,,	(पं०)
,,	वाचोः	वाचाम्	(ष०)
वाचि	,,	वाक्षु	(स०)
हे वाक्, हे वाग्	हे वाचौ	हे वाचः	(संबो०)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्त्तमाने (लट्)

धातुरूपाणि

कृ (कर्) परस्मैपदम्

एक०	द्वि०	बहु०	
करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति	(प्र० पु०)
करोषि	कुरुथः	कुरुथ	(म० पु०)
करोमि	कुर्वः	कुर्मः	(उ० पु०)

आत्मनेपदम्

एक०	द्वि०	बहु०	
कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते	(प्र० पु०)
कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे	(म० पु०)
कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे	(उ० पु०)

श्रु० (शृ) परस्मैपदम्

शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति	(प्र० पु०)
शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ	(म० पु०)
शृणोमि	शृण्वः, शृणुवः	शृण्मः, शृणुमः	(उ०पु०)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तृतीयः पाठः

बुद्धिः यस्य बलं तस्य

पाठ्याः शब्दाः—बलदर्पात्, व्यापादयन्, समयधर्मः, श्वापदः, वधोपायम्, वेलातिक्रमेण, प्रतिबिम्बम्, प्रेषितवन्तः, अभीष्टदेवताम्, विश्वासस्थाने, दुर्गम्, भक्षयति, भक्षयिष्यति, क्षय, अभक्षयत्।

कूपमदर्शयत्

कस्मिंश्चित् (कस्मिन्+चित्) वने भासुरको ाम सिंहः प्रतिवसति स्म। अथायम् बलदर्पात् नित्यमेव गशशकादीन् मारयित्वा भक्षयति स्म। एकस्मिन् ने सर्वे पशवः मिलित्वा तम् अगच्छन् अकथयन् च—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"स्वामिन्, किम् अनेन सकलानां पशूनां नित्यवधेन। तव एकेनैव मृगेण तृप्तिः भवति। तत् करोतु अस्माभिः सह समयधर्मम्। अद्यारभ्य अत्रैव उपविष्टस्य तव पार्श्वे प्रतिदिनम् जातिक्रमेण एकः मृगः आगमिष्यति। त्वं च तं भक्षय। तव क्लेशो न भविष्यति, अस्माकं च सर्वनाशो न भविष्यति।" इति

भासुरकः आह—'सत्यमुक्तवन्तः यूयम्। किन्तु यदात्र उपविष्टस्य मम पार्श्वे कस्मिन् अपि दिने एकः श्वापदः न समागमिष्यति तदा सर्वान् अपि युष्मान् भक्षयिष्यामि' इति। अथ ते तथैव प्रतिज्ञाय निर्भयाः सन्तः अटन्ति स्म। एकश्च समयधर्मम् अनुसृत्य नित्यम् याति स्म। सिंहः तम् अभक्षयत्।

एकदा जातिक्रमात् शशकस्य अवसरः समागतः। सः सिंहस्य वधोपायं चिन्तयन्, नियतं कालम् व्यतीत्य अयात्। मार्गे च एकं कूपमपश्यत्। तस्मिन् चात्मनः प्रतिबिम्बं दृष्ट्वा परं हर्षम् अगच्छत्। वेलातिक्रमे जाते दिनशेषे समायान्तं शशकं दृष्ट्वा प्रज्वलितात्मा भासुरकः गर्जन् आह—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"रे शशकाधम, एकस्तावत् त्वं लघुः, अपरतः वेलातिक्रमेण समागतः। अस्मात् तवापराधात् श्वः सर्वान् श्वापदान् भक्षयिष्यामि।" इति

शशकः वदति—"देव, नास्ति ममात्र अपराधः।"

सिंहः अपृच्छत्—"तर्हि कस्यापराधः। शीघ्रं निवेदय।"

शशकः अवदत्—"सर्वे श्वापदाः मां लघुतरं विज्ञाय मया सह अन्ये चतुरः शशकान् प्रेषितवन्तः। मार्गे च कूपात् एकस्मात् अन्यः सिंहः निर्गतवान्, उक्तवांश्च—"रे शशकाः! क्व प्रस्थिताः यूयम्। अभीष्टदेवतां स्मरत।" ततोऽहं उक्तवान्—'स्वामिनः महाराजस्य भासुरकस्य सिंहस्य सकाशं तस्य भोजनार्थं गच्छामः। तेन सह अस्माकं समयधर्मः एष वर्तते'। सः उक्तवान्—'मम एतत् वनम्। मया सह समयधर्मं कुरुत। चोररूपी भासुरकः। यदि सः आत्मानं राजा इति कथयति तर्हि आगच्छतु, युद्धेन निर्णयो भविष्यति। विश्वासस्थाने चतुरः शशकान् धृत्वा त्वं गच्छ'। अत एव विलम्बोऽभवत्। अत्र देवः प्रमाणम्।" इति।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तत् श्रुत्वा क्रुद्धः सिंहः शशकेन सह चौरसिंहस्य दुर्गं गच्छति स्म। शशकश्च दूरतः एव दुर्गभूतं कूपमदर्शयत्। क्रोधान्धः भासुरकः स्वस्यैव प्रतिबिम्बं कूपजले दृष्ट्वा मेघस्वरेणागर्जत्। श्रुत्वा च स्वगर्जनस्य द्विगुणितां प्रतिध्वनिं छायासिंहस्य उपरि अपतत् मृतवांश्च।

प्रश्नाः—भासुरकः कस्मात् मृगशशकादीन् भक्षयति स्म। पशवः कं समयधर्मम् कुर्वन्ति स्म। भासुरकः किमुत्तरं ददाति स्म। स्वक्रमावसरे शशकः कस्मात् विलम्बं करोति स्म। शशकः विलम्बस्य किं कारणमकथयत्। चौरसिंहस्य कं वृत्तान्तम् कथयति स्म। भासुरकः किं निर्णीतवान्। कूपे स्वप्रतिबिम्बं दृष्ट्वा सः किं करोति स्म। गर्जनं कृत्वा किं शृणोति स्म। द्विगुणितां प्रतिध्वनिं श्रुत्वा किं विदधाति स्म। स्वल्पः शशकः केन बलेन सिंहस्य नाशं करोति स्म।

अभ्यास

१—खरहे और भासुरक की कथा हिन्दी में लिखो।

२—संस्कृत में अनुवाद करो—स्यार ने सिंह की गरजना (गर्जन) सुना (शृणोति स्म)। बालक ने गाय की आवाज

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुनी । राम ने अपना काम किया । पिता ने पुत्र को पुस्तक पढ़ाई । सिंह खरहे के साथ कूएँ के पास गया ।

३—पाठ में गच्छ्, भू और कथ धातु के वर्त्तमान रूपों में जिन वाक्यों में 'स्म' लगाया है, उनको अनद्यतन भूत (लङ्) में बदल दो ।

व्याकरणम्—

(१) गच्छति स्म = अगच्छत्, कथयति स्म = अकथयत्, भवति स्म = अभवत् ।

नियम—वर्त्तमान के रूपों में 'स्म' लगा देने से भूत का अर्थ होता है ।

(२) शब्दरूपाणि—

अकारान्तः पुंल्लिङ्गः एक-शब्दः

एक०	द्वि०	बहु०	
एकः	एकौ	एके	(प्र०)
एकम्	,,	एकान्	(द्वि०)
एकेन	एकाभ्याम्	एकैः	(तृ०)
एकस्मै	,,	एकेभ्यः	(च०)
एकस्मात्	,,	,,	(पं०)
एकस्य	एकयोः	एकेषाम्	(ष०)
एकस्मिन्	,,	एकेषु	(स०)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्त्रीलिङ्गः एका–शब्दः

एका	एके	एकाः	(प्र०)
एकाम्	,,	,,	(द्वि०)
एकया	एकाभ्याम्	एकाभिः	(तृ०)
एकस्यै	,,	एकाभ्यः	(च०)
एकस्याः	,,	,,	(पं०)
,,	एकयोः	एकासाम्	(ष०)
एकस्याम्	,,	एकासु	(स०)

अकारान्तः नपुंसकलिङ्गः एक–शब्दः

एकम्	एके	एकानि	(प्र०)
,,	,,	,,	(द्वि०)

(शेषं पुँल्लिङ्गवत्)

धातुरूपाणि

भक्ष् (भक्षि)

वर्त्तमाने (लट्)

एक०	द्वि०	बहु०	
भक्षयति	भक्षयतः	भक्षयन्ति	(प्र०पु०)
भक्षयसि	भक्षयथः	भक्षयथ	(म०पु०)
भक्षयामि	भक्षयावः	भक्षयामः	(उ०पु०)

सामान्ये भविष्यति (लृट्)

भक्षयिष्यति	भक्षयिष्यतः	भक्षयिष्यन्ति	(प्र०पु०)
भक्षयिष्यसि	भक्षयिष्यथः	भक्षयिष्यथ	(म०पु०)
भक्षयिष्यामि	भक्षयिष्यावः	भक्षयिष्यामः	(उ०पु०)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रवर्त्तनायाम् (लोट्)

भक्षयतु	भक्षयताम्	भक्षयन्तु	(प्र० पु०)
भक्षय	भक्षयतम्	भक्षयत	(म० पु०)
भक्षयाणि	भक्षयाव	भक्षयाम	(उ० पु०)

विधौ (लिङ्)

भक्षयेत्	भक्षयेताम्	भक्षयेयुः	(प्र० पु०)
भक्षयेः	भक्षयेतम्	भक्षयेत	(म० पु०)
भक्षयेयम्	भक्षयेव	भक्षयेम	(उ० पु०)

अनद्यतने भूते (लङ्)

अभक्षयत्	अभक्षयताम्	अभक्षयन्	(प्र० पु०)
अभक्षयः	अभक्षयतम्	अभक्षयत	(म० पु०)
अभक्षयम्	अभक्षयाव	अभक्षयाम	(उ० पु०)

चतुर्थः पाठः

गुरुकुलम्

पाठ्याः शब्दाः—गुरुकुलम्, आचार्यः, आश्रमः, जटिलाः, दण्डिनः, उपनीताः, वेदाङ्गानि, इन्धनम्, संपादयन्ति, सम्पाद्य,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निर्वर्त्य, विरम्य, वेदिका, सुरभिमयः, पावनीकरोति ।

गुरुकुलमिदम्

अस्मिन् तपोवने आचार्यस्य आश्रमोऽस्ति । अस्मिन्नेव आश्रमे गुरुकुलं-वर्त्तते । अत्र उपनीताः शिष्याः तिष्ठन्ति । एते जटिलाः दण्डिनः ब्रह्मचारिणः सन्ति । गुरोः कुले विद्यां पठितुं तेऽत्र निवसन्ति । स्वपितुः स्वमातुः च गृहाणि त्यक्त्वा दूरदेशेभ्यः आगत्य वेदाध्ययनं कुर्वन्ति । इमेऽन्तेवासिनः आचार्यात् वेदान्, वेदाङ्गानि अन्यानि च शास्त्राणि पठन्ति ।

तपोवनस्थे गुरुकुलेऽत्र सर्वे छात्राः समानाः सन्ति । राज्ञां, धनपतीनां, निर्धनानां वा पुत्राः सर्वे समानाः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भवन्ति। केनापि सह पक्षपातः न भवति। सर्वे गुरोः सेवां कुर्वन्ति, हवनाय इन्धनानि, तर्पणाय, पूजनाय च कुशान् आहरन्ति, जलानि चानयन्ति। स्वस्मै गुरवे च नित्यं समीपस्थात् ग्रामात् भिक्षामपि आहरन्ति। गुरोः भोजनानन्तरम् अवशिष्टम् अन्नं भक्षयन्ति। गुरोः पादसंवाहनं कुर्वन्ति अन्याः च विविधाः सेवाः सम्पादयन्ति।

ब्राह्मे मुहूर्त्ते ते बुध्यन्ते। नित्यकृत्यानि संपाद्य, दन्तधावनादीनि निर्वर्त्य, स्नानं कृत्वा, सन्ध्यां प्राणायामादीनि च विधाय, गुरवे जलकुशेन्धनादीनि च आहृत्य, आचार्यस्य सकाशं ते पठितुं यान्ति। तत्र गत्वा श्रद्धया गुरोः पादवन्दनं च कृत्वा तिष्ठन्ति, पठन्ति च। मध्याह्ने भिक्षाहरणं कृत्वा, भुक्त्वा, किञ्चित् विरम्य च पुनः ते पठितस्य अभ्यासं कुर्वन्ति। सन्ध्यातः पूर्वमेव इन्धनादीनि आहृत्य, किंचित्कालं खेलन-धावनादीनि कृत्वा, सायंकृत्यानि विधाय गुरोः समीपे पुराणादीनां कथाः श्रोतुम् उपविशन्ति। तत्र विविधाः कथावार्त्ताः भवन्ति। ततश्च रात्रौ गुरोराज्ञामादाय स्वपन्ति।

इयं च पुरतः वेदिका वर्तते। अत्र यागहवनादीनि जायन्ते। इमौ अत्र हवनं कुर्वाणौ वेदिकापार्श्वे उपवि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शतः। गुरुकुले नित्यं हवनं भवति। यज्ञस्य सुरभिमयः धूमः नित्यमेव पावनीकरोति तपोवनम्।

इह सर्वत्र शान्तिः वर्तते। द्वेषः, कलहोऽपराधः विरोधश्च नात्र सन्ति। पशवोऽपि सहजं वैरं विस्मृत्य इह निवसन्ति का चर्चा मनुष्याणाम्। सिंहाः मृगाः, मयूराः सर्पाः अन्ये च जन्तवः वैरहीनाः बन्धव इवात्र तिष्ठन्ति। अहो, शान्तिमयी इयं पुण्या तपोवनभूमिः। धन्याः येऽत्र निवसन्ति।

प्रश्नाः--कुत्र गुरुकुलम् वर्तते। एते जटिलाः के सन्ति। ते किम् आचार्यात् पठन्ति। कुत्र सर्वे छात्राः समानाः भवन्ति। कथं ते गुरोः सेवां कुर्वन्ति। गुरवे ते किम् आहरन्ति। कदा ते बुद्धयन्ते। बुद्ध्वा ते किम् कुर्वन्ति। भिक्षाम् आहर्त्तुं कुत्र गच्छन्ति। मध्याह्ने किं कुर्वन्ति। सन्ध्यायाम् किम् आचरन्ति। पुराणकथां कदा शृण्वन्ति। वेदिकायां किं भवति। धूमः किं करोति। कुत्र जन्तवः स्वाभाविकं वैरं विहाय तिष्ठन्ति।

अभ्यास

१—अपनी संस्कृति में दस वाक्यों द्वारा गुरुकुल का वर्णन करो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२—हिन्दी में अनुवाद करो—

गुरुकुलेषु आचार्याः छात्रान् पुत्रवत् मन्यन्ते स्म। छात्राणां सेवया आचार्याः प्रसीदन्ति स्म। ब्रह्मचर्यव्रतं पालयन्तः ते पठन्ति स्म। नित्यं प्रातः ते गुरोः पादवन्दनं कुर्वन्ति स्म। पादवन्दनेन आयुः, विद्या, यशः बलंच वर्धन्ते।

व्याकरणम् :—

१—पूर्वकालिक कृदन्त।

गत्वा, भुक्त्वा, दृष्ट्वा आदि।

धातु से त्वा (कभी कभी इत्वा) लगाकर बनाया जाता है। कृ + त्वा, भुज् + त्वा, गम् + त्वा, दृश् + त्वा, चल् + इत्वा के क्रमशः कृत्वा, भुक्त्वा, दृष्ट्वा, चलित्वा आदि रूप होते हैं।

[२—अत्र अध्यापकः पाठनेन सहैव ऐतिहासिकस्य वर्तमानकालस्य महत्वं बोधयेत्।]

३—शब्दरूपाणि:—

अकारान्तः पुँल्लिङ्गः सर्वशब्दः (सर्वनाम)

एक०	द्वि०	बहु०	
सर्वः	सर्वौ	सर्वे	(प्र०)
सर्वम्	,,	सर्वान्	(द्वि०)
सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः	(तृ०)
सर्वस्मै	,,	सर्वेभ्यः	(च०)
सर्वस्मात्	,,	,,	(पं०)
सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्	(ष०)
सर्वस्मिन्	,,	सर्वेषु	(स०)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आकारान्तः स्त्रीलिङ्गः सर्वाशब्दः (सर्वनाम)

एक०	द्वि०	बहु०	
सर्वा	सर्वे	सर्वाः	(प्र०)
सर्वाम्	,,	,,	(द्वि०)
सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः	(तृ०)
सर्वस्यै	,,	सर्वाभ्यः	(च०)
सर्वस्याः	,,	,,	(पं०)
,,	सर्वयोः	सर्वासाम्	(ष०)
सर्वस्याम्	,,	सर्वासु	(स०)

अकारान्तः नपुंसकलिङ्गः सर्वशब्दः

सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि	(प्र०)
,,	,,	,,	(द्वि०)

शेषं पुँल्लिङ्गवत् ।

पंचमः पाठः

पम्पा-वर्णनम्

पाठ्याः शब्दाः—प्रसन्ना, निर्मलोदका, फुल्लपद्मः, पादपाः, सुरभिः, तोयमुचाम्, प्रस्तरेषु, विक्षिपन्, गिरिप्रस्थेषु, कर्णिकारान् अवकिरन्ति, गाम्, मोदविवर्धनम्, साङ्गरागाः, चलमानखाः, ।

सौमित्रे ! शोभते पंपा प्रसन्ना निर्मलोदका ।
फुल्लपद्मैः पद्मवती शोभिता विविधैर्द्रुमैः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सौमित्रे ! पश्य पंपायाः काननं शुभदर्शनम् ।
पादपाः यत्र राजन्ते, शैलाः सशिखरा इव ॥

मन्दानिलोऽयं सौमित्रे कालः काङ्क्षाविवर्धकः ।
गन्धवान् सुरभिर्मासः, द्रुमः पुष्पफलान्वितः ॥

पश्य लक्ष्मण ! रूपाणि वनानां पुष्पशालिनाम् ।
वर्षतां पुष्पवर्षाणि वर्षे तोयमुचामिव ।

प्रस्तरेषु च रम्येषु विविधाः काननद्रुमाः ।
वायुवेगैः प्रचलिताः पुष्पैरवकिरन्ति गाम् ॥

पतितैः पतमानैश्च पादपस्थैश्च मारुतः ।
कुसुमैः पश्य सौमित्रे क्रीडतीव समन्ततः ॥

विक्षिपन् विविधाः शाखाः नगानां कुसुमान्विताः ।
मारुतश्चलितैः स्थानैः, षट्पदै-रनुगीयते ॥

गिरिप्रस्थेषु रम्येषु पुष्पवद्भिः मनोरमैः ।
संपन्नशिखराः शैलाः विराजन्ते महाद्रुमैः ॥

पुष्पितान् (किल) पश्यैतान् कर्णिकारान् समन्ततः ।
सुवर्णैनेव संच्छन्नान् नरान् पीताम्बरानिव ॥

सन्तापयति सौमित्रे, क्रूरश्चैत्रवनानिलः ।
अमी मयूराः शोभन्ते सुनृत्यन्त इतस्ततः ॥

पश्य लक्ष्मण, संनादं वने मोदविवर्धनम् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पर्वताग्रेषु वृक्षेपु विहगानां च कूजताम् ॥

अमी लक्ष्मण ! दृश्यन्ते ह्याम्राः कुसुमशालिनः ।
साङ्गरागा इव नराः क्रीडया चलमानसाः ॥

सौमित्रे, पश्य पम्पायाः चित्रासु वनराजिषु ।
किन्नरा नरशार्दूल ! विचरन्ति समन्ततः ॥

इमानि शुभगन्धीनि पश्यलक्ष्मण ! सर्वतः ।
कमलानि प्रकाशन्ते जले तरुणसूर्यवत् ॥

जले तरुणसूर्याभैःभ्रमराहतकेसरैः ।
पंकजैः शोभते पम्पा समन्ताद् अभिसंवृता ॥

प्रश्नाः—कैः पम्पा शोभते । पादपाः के इव राजन्ति । कः कालः काङ्क्षाविवर्धकः अस्ति । वनानि कथं पुष्पवर्षाणि वर्षन्ति । मारुतः कैः सह क्रीडतीव राजते । पुष्पिताः कर्णिकाराः के इव शोभन्ते । कः क्रूरः सन्तापयति । कूजतां विहगानां नादः कुत्र वर्त्तते । कुसुमशालिनः आम्राः के इव आभान्ति । किन्नराः कुत्र विचरन्ति । कमलानि किमिव प्रकाशन्ते ।

अभ्यास

१—संस्कृत में अनुवाद करो—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह पम्पा का वर्णन है। पम्पा नामक एक सरोवर है। सीता को ढूँढ़ते हुए (गवेषयन्) राम वहाँ गए थे। पम्पा सरोवर बड़ा सुन्दर स्थान था। उसके पास वन था। वन में बहुत से पेड़ थे। वे पेड़ फूलों-फलों से युक्त थे।

(२) हिन्दी में अनुवाद करो—

रामः—सौमित्रे! पम्पायाः शुभदर्शनं काननं पश्य। अत्र वृक्षाः सशिखराः पर्वताः इव राजन्ते। सुरभिः मासः गन्धवान् अस्ति। पम्पायाः वने वृक्षाः पुष्पाणि वर्षन्ति। रम्येषु प्रस्तरेषु काननद्रुमाः सन्ति। ते वायुना प्रचलितैः पुष्पैः पृथिवीम् अवकिरन्ति। कर्णिकाराणां वृक्षेषु पीतानि पुष्पाणि विकसितानि सन्ति। तैः वृक्षाः पीताम्बराः नराः इव आभान्ति।

व्याकरणम्:—

(१) समासः—निर्मलोदका—निर्मलम् उदकं यस्याः सा। पीताम्बरान्—पीतानि अम्बराणि येषां ते तान्। चलमानसाः—चलानि मानसानि येषां ते।

[अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः]

काङ्क्षाविवर्धकः—काङ्क्षायाः विवर्धकः। वनराजयः—वनस्य राजयः। चैत्रवनानिलः—चैत्रस्य वनानिलः। काननद्रुमाः—काननस्य द्रुमाः।

[उत्तरपदार्थप्रधानः तत्पुरुषः]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(२) **सन्धिः**—पतमानश्च = पतमानस् + च ।

मारुतश्चलितैः = मारुतस् + चलितैः ।

क्रूरश्चैत्रवनानिलः = क्रूरस् + चैत्रवनानिलः ।

नियमः—शकार और चवर्ग (च् छ् ज् झ् ञ्) के योग में सकार और तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) के स्थान पर क्रमशः शकार और चवर्ग हो जाते हैं । (स्तोःश्चुना श्चुः) [तु–तवर्गः, चु–चवर्गः]

उदाहरणः—सच्चरितम् (सत् + चरितम्) ऐतज्जलम् (एतत् + जलम्) भगवच्छविः (भगवत् + छविः) शत्रूञ्जयति (शत्रून् + जयति) ।

धातुरूपाणि-लृट् [कृ (कर्)]

	एक०	द्वि०	ब० व०
आत्मनेपद	करिष्यताम्	करिष्येताम्	करिष्यन्ताम्
	करिष्यस्व	करिष्येथाम्	करिष्यध्वम्
	करिष्ये	करिष्यावहि	करिष्यामहि

षष्ठः पाठः

प्रत्युत्पन्नमतिः वानरः

पाठ्याः शब्दाः—प्रत्युत्पन्नमतिः, समुत्पन्नेषु, हीयते, दुर्गम्, एकस्याः, जम्बूवृक्षः, मकरः, कथितवान्, उक्तवान्, कथितवती, श्रुतवती, भ्रातृजाया, अगाधे, सुगोपितम्, उत्प्लुत्य, कृतवान्, पयः, वधूः ।

समुत्पन्नेषु कार्येषु बुद्धिर्यस्य न हीयते ।
स एव दुर्गं तरति जलस्थो वानरो यथा ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एकस्याः नद्यास्तटे एकः महान् जम्बूवृक्षः आसीत्। तत्र एकः रक्तमुखो नाम वानरः प्रतिवसति स्म। तस्यां च नद्यां एकः मकरः आसीत्। यदा कदा च नद्याः पयसः निष्क्रम्य स वृक्षस्य अधः न्यविशत्। वानरश्च तं मित्रम् अकरोत्। मधुराणि च जम्बूफलानि तस्मै अददात्। मकरश्च भुक्तशेषं फलं समानीय स्वाभार्यायै समर्पयत्।

एकस्मिन् दिने मकरस्य वधूः स्वपतिम् कथितवती "अहं तव मित्रस्य वानरस्य हृदयं खादितुमिच्छामि। यः खलु नित्यम् एतादृशं मधुरं जम्बूफलं खादति तस्य हृदयम् अवश्यमेव अमृतमयं भविष्यति। यदि च त्वम् न आनेष्यसि तस्य हृदयं तर्हि अनशनं कृत्वाहं प्राणान् त्यक्ष्यामि।" इति।

मकरः कथितवान्—"नित्यस्य फलदानेन स मित्रं मे जातः। तस्य वधे मित्रहत्यायाः महत् पातकं भविष्यति।" इति।

किन्तु मकरवधूः किंचिदपि न श्रुतवती। स्त्रियाः हठः मकरं विवशम् करोति स्म।

सः वानरं गतवान्। उक्तवाँश्च—"तव भ्रातृजाया स्वगृहे तव स्वागतं सत्कारं च विधातुम् इच्छति।" इति।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एवं मधुरैः वचनैर्वञ्चयित्वा तं रक्तमुखं स्वपृष्ठे समारोप्य गृहं प्रस्थितवान्। अगाधे च पयसि प्राप्ते मकरः उक्तवान् सर्वं वध्वाः वृत्तान्तम्।

प्रत्युत्पन्नमतिः वानरः प्रोक्तवान्—"भद्र, यद्येवं पूर्वमेव त्वं कथं नोक्तवान्। मम हृदयं तु एकमेव वर्त्तते। तच्च वृक्षशाखायां सुगोपितं वर्त्तते। एकस्याः शाखायाः द्वितीयायामुत्प्लवने तच्चूर्णम् भवेत्, यदि सुगुप्तं न स्यात्। ततो नय मां तत्रैव"। इति।

मूर्खः मकरः तथैव अकरोत्। तीरं प्राप्य वानरः उत्प्लुत्य शाखामारूढवान्–प्रोक्तवान् च। "मूढ, वंचितोऽसि। सर्वस्यापि खलु एकमेव हृदयं भवति कस्यापि न द्वे स्तः। तद्गच्छ, भवतु तावत् ते वचनम्। नाहं तत् श्रोष्यामि। गच्छ, इतः। न त्वयात्र पुनरागन्तव्यम्।" इति।

मकरः पुनः पुनः प्रार्थनां कृतवान्। किन्तु चतुरः वानरः विश्वासघातकस्य वचनं न शृणोति स्म।

प्रश्नाः—जम्बूवृक्षः कुत्रासीत्। तत्र कः प्रतिवसति स्म। नद्याम् कः आसीत्। सः नद्याः पयसः निष्क्रम्य किम् कृतवान्। वानरः तस्मै कानि फलानि दत्तवान्। मकरस्य वधूः मधुराणि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फलानि खादित्वा किमकथयत् । मकरः पूर्वं वधूं किम् प्रत्युक्तवान् । वध्वाः हठेन विवशो भूत्वा सः किम् कृतवान् । कथं मकरः कपिं (वानरं) वञ्चितवान् । पयसि गत्वा मकरः वानरं किं कथितवान् ।

कर्त्तव्ये उपस्थिते कस्य बुद्धिर्न हीयते स्म । वानरः कथं स्वप्राणरक्षां कृतवान् ।

अभ्यास

(१) बुद्धि शब्द और फल शब्द के रूप लिखो—

(२) 'कथितवान्' और 'कथितवती' के प्रयोग जिन जिन वाक्यों में हों उनके स्थानों पर 'कथ्' धातु के अनद्यतन भूत (लङ्) का प्रयोग करते हुए उन वाक्यों को लिखो । इसी प्रकार 'गतवान्' के स्थान पर गम् के अनद्यतन भूत का रूप लिखो ।

(३) ऊपर लिखे प्रश्नों में से आरम्भ के पाँच प्रश्नों का अपनी संस्कृत में उत्तर दो ।

(४) प्रत्युत्पन्नमति वानर की कथा हिन्दी में लिखो ।

व्याकरणम्

सकारान्तः नपुंसकलिङ्गः पयस्—शब्दः

एक०	द्वि०	बहु	
पयः	पयसी	पयांसि	(प्र०)
,,	,,	,,	(द्वि०)
पयसा	पयोभ्याम्	पयोभिः	(तृ०)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एक०	द्वि०	बहु०	
पयसे	पयोभ्याम्	पयोभ्यः	(च०)
पयसः	"	"	(पं०)
"	पयसोः	पयसाम्	(ष०)
पयसि	"	पयस्सु	(स०)
हे पयः	हे पयसी	हे पयांसि	(सं०)

ऊकारान्तः स्त्रीलिङ्गो वधू—शब्दः

वधूः	वध्वौ	वध्वः	(प्र०)
वधूम्	"	वधूः	(द्वि०)
वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः	(तृ०)
वध्वै	"	वधूभ्यः	(च०)
वध्वाः	"	"	(पं०)
"	वध्वोः	वधूनाम्	(ष०)
वध्वाम्	"	वधूषु	(स०)
हे वधु	हे वध्वौ	हे वध्वः	(सं०)

धातुरूपाणि—भविष्यति लृङ्

'श्रु' परस्मैपद	श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति	(प्र०पु०)
	श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ	(म०पु०)
	श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः	(उ०पु०)
कृ (कर्) परस्मैपद	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति	(प्र०पु०)
	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ	(म०पु०)
	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः	(उ०पु०)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सप्तमः पाठः

उत्तमानि रत्नानि

पाठ्याः शब्दाः—यजने, याजने, अयापयन्, उदारचरितानाम्, परावृत्य, भृशम्, दूयते, वर्त्तयसि, स्वर्णरजतैः।

आसीत् वेदस्थलं नाम नगरम्। तस्मिन् नगरे बहवः विद्वांसः ब्राह्मणाः अवसन्। यजने याजने ते स्वसमयम् अयापयन्। सदा च ते दानशीलाः ब्राह्मणाः परेषां कल्याणानि अचिन्तयन्। धनादीन् प्रति सदा ते उदासीनाः अभवन्। परोपकारः एव तेषां चिन्ताविषय आसीत्। द्रोहलोभाभ्यां निरन्तरमेव ते दूरम् अतिष्ठन्।

तेषामेव ब्राह्मणानाम् उदारचरितानामाश्रये काचित् निर्धना विधवा ब्राह्मणी न्यवसत्। सा स्त्री पञ्चानां पुत्राणां माता आसीत्। तस्याः पञ्चापि पुत्राः सदा मातुः आज्ञाम् अपालयन्। नित्यं प्रातः मातरं वन्दन्ते स्म। मातुः आज्ञां प्राप्य ते कर्म अकुर्वन्। मातरि तेषां दृढा भक्तिः आसीत्।

तया स्त्रिया पठने नियोजिताः पञ्च पुत्राः विदुषः उपाध्यायात् शास्त्राण्यपठन्। पठित्वा च पाठशालातः परावृत्य सर्वं वृत्तान्तं मात्रे निवेदयन्ति स्म। परमतुष्टा च

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सा स्त्री दीना अपि सदा प्रसन्ना अभवत्। पुत्रानवलोक्य स्वदुःखानि विस्मृतवती।

एकदा कश्चित् दयालुः पुरुषः तस्याः निर्धनतां दृष्ट्वा खिन्नोऽभवत्, दयमानश्च तां स्त्रीम् पृष्टवान्—

"देवि, तव दरिद्रतां विलोक्य मे मनः भृशं दूयते। सुचरित्रापि भवती धनाभावेन पीड्यते! एतेषु सुदुःसहेषु कष्टेषु त्वं कथं वर्त्तयसि" इति।

कृपालोः उदारां वाणीं श्रुत्वा तस्याः लोचनाभ्याम् अश्रूणि अपतन्। स्निग्धया वाण्या सा उत्तरमददात्—

"भद्र, स्वस्ति ते भवतु यत्त्वं मयि निर्धनायां सक रुणोऽसि। किन्तु स्वर्णरजतैः रहिताऽपि नाहं दरिद्रा यतः मे सन्ति पञ्चामूल्यानि रत्नानि" इति।

चकितः भूत्वा पुरुषः पप्रच्छ– "किम् एत सत्यं यथा त्वं कथयसि। यदि चेत् इत्थमेव तर्हि कुत्र रत्नानि। तानि द्रष्टुकामोऽहम्" इति।

एतावति एव अन्तरे उपाध्यायात् पाठं पठित्वा ते पञ्च पुत्राः समागच्छन्। आगत्य च सर्वतः प्रथमं मातुश्चरणाव वन्दन्त। वात्सल्यात् स्नेहगद्गदा सा तान् दयालवे दर्श यन्ती प्रोवाच—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"भद्रपुरुष ! विलोकय, इमान्येव पुत्ररूपाणि मम पञ्च रत्नानि" । इति । ततः तान् विनीतान् मातृभक्तान् पुत्रान् दृष्ट्वा परमप्रसन्नो भूत्वा सोऽवदत् । "सत्यमुक्तवती भवती । सुपुत्रः सर्वरत्नेभ्यः उत्तमं रत्नम् । अत एव उक्तमेतत्—

"वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतान्यपि ।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारागणा अपि" इति ।

प्रश्नाः—वेदस्थले नाम्नि नगरे के अवसन् । ते ब्राह्मणाः कीदृशाः आसन् । ते कस्मिन् कार्ये समयम् अयापयन् । ते किम् अचिन्तयन् । तेषामाश्रये का आसीत् ।

तस्याः कति पुत्राः आसन् । पुत्राः कां वन्दन्ते स्म । कस्याः आज्ञां प्राप्य ते कर्म अकुर्वन् । कुत्र तेषां दृढा भक्तिः आसीत् । कान् विलोक्य माता स्वदुःखानि विस्मृतवती । दयमानः दयालुः किं पृष्टवान् । सा किमुत्तरं ददौ । के तस्याः पञ्च रत्नानि आसन् । किं सर्वरत्नेभ्यः उत्तमम् । किं वरम् ।

अभ्यास

(१) सन्धिविच्छेद करो—शास्त्राण्यपठन् ।। खिन्नोऽभवत् । सुचरितापि । द्रष्टुकामोऽहम् । इमान्येव । एकश्चन्द्रः ।

(२) संस्कृत में अनुवाद करो—मूर्ख पुत्र हृदय को जलाता है । विधवा की निर्धनता देखकर गोपाल दयार्द्र हो गया । भिक्षुक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को भूख देखकर दया करते हुए किशोर ने पूछा। उस आश्रम में पढ़ने-पढ़ाने वाले विद्वान् रहते थे। गुरु के यहाँ पांच छात्र पढ़ने के लिये बैठे थे।

(३) हिन्दी में अनुवाद करो—

(क) वरमेको.............तारागणा अपि।

(ख) किं तया क्रियते धेन्वा या न सूते न दुग्धदा।

कोऽर्थः पुत्रेण जातेन यो न विद्वान् न भक्तिमान्।

(१) शब्दरूपाणि—

ऋकारान्तः स्त्रीलिङ्गः मातृ-शब्दः

एक०	द्वि०	बहु०	
माता	मातरौ	मातरः	(प्र०)
मातरम्	,,	मातॄः	(द्वि०)
मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः	(तृ०)
मात्रे	,,	मातृभ्यः	(च०)
मातुः	,,	,,	(पं०)
,,	मात्रोः	मातॄणाम्	(ष०)
मातरि	,,	मातृषु	(स०)
हे मातः	हे मातरौ	हे मातरः	(सं०)

ईकारान्तः स्त्रीलिङ्गः स्त्री-शब्दः

एक०	द्वि०	बहु०	
स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः	(प्र०)
स्त्रियम्, स्त्रीम्,	,,	,,	(द्वि०)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एक०	द्वि०	बहु०	
स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः	(तृ०)
स्त्रियै	,,	स्त्रीभ्यः	(च०)
स्त्रियाः	,,	,,	(पं०)
,,	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्	(ष०)
स्त्रियाम्	,,	स्त्रीषु	(स०)
हे स्त्रि	हे स्त्रियौ	हे स्त्रियः	(सं०)

(२) धातुरूपाणि—

अनद्यतनभूते (लङ्)

	एक०	द्वि०	बहु०	
स्था (तिष्ठ्)	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्	[प्र०पु०]
	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत	[म०पु०]
	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम	[उ०पु०]
कृ (कर् परस्मैपदम्)	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्	[प्र०पु०]
	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत	[म०पु०]
	अकुर्वम्	अकुर्व	अकुर्म	[उ०पु०]
(आत्मनेपदम्)	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत	[प्र०पु०]
	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्	[म०पु०]
	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि	[उ०पु०]
श्रु (शृ)	अशृणोत्,	अशृणुताम्	अशृण्वन्	[प्र०पु०]
	अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत	[म०पु०]
	अशृणवम्	अशृण्व / अशृणुव	अशृण्म / अशृणुम	[उ०पु०]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अष्टमः पाठः

महामनाः मालवीयः

पाठ्या शब्दाः—महामनाः, आँग्लभाषा, धवलवेषः, मृदुः, परम-निपुणः, सप्ततारम्, व्यवहरति, कुलपतिः, समितिः, परिषद्, अमोहयत्, वन्दिगृहम्, अग्रजमिव, अमरकीर्तिः, मुहुर्मुहुः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रातः स्मरणीयस्य महामनसः मालवीयमहोदयस्य चित्रमेतत् । प्रयागे पण्डितानां कुले १८६१ ख्रीष्टीयेऽस्य जन्म अभवत् । तत्रैव मदनमोहनस्य शिक्षाऽपि अभवत् । बाल्यादेव समाजस्य देशस्य च सेवाकरणे अस्य रुचिः आसीत् । पण्डितकुलोत्पन्नस्यापि अस्य आंग्लभाषायाः पठने लालसा अजायत । पिता यथाकथंचित् तथा व्यवस्थामकरोत् । किन्तु आंग्लभाषया सह संस्कृतभाषामपि मालवीयः कुशलतां प्राप्नोत् ।

यथाऽयं बहिः धवलवेषः आसीत् । तथैवास्य हृदयमपि निष्पापं, पवित्रं निर्मलमभूत् । मनुष्याणां, भारतस्य, हिन्दुधर्मावलम्बिनश्च कल्याणस्य चिन्तां सदा अयमकरोत् । परेषां दुःखानि दृष्ट्वा सदैवायम् दुःखी भवति स्म । अनेकाः अनाथाः विधवाः निर्धनाश्च एतस्मात् सहायतां प्राप्य वर्त्तयन्ति स्म । अस्य हृदयम् अतीव कोमलं मृदु स्नेहमयं चासीत् । मातापित्रोः परमभक्तः आसीत् । देवानां पण्डितब्राह्मणानां च सदा पूजामकरोत् । भगवतः परमो भक्तः अभवत् ।

भाषणकलायां चायं परमनिपुणः बाल्यादेवासीत् । आंग्लभाषायाम् संस्कृतभाषायाम् हिन्दीभाषायां च मदन-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मोहनोऽद्भुतम् अभाषत। विदेशीयाः शासकाः प्रतिपक्षिणश्च अपि अस्य भाषणं श्रुत्वा मुग्धाः बभूवुः। मधुरेण स्वरेण अयं गायति स्म, सप्ततारं वादयति स्म, कवितां रचयति स्म। अयमध्यापकः अपि आसीत्। तदा अयं पुत्रान् इव छात्रान् व्यवहरति स्म। कुलपतिपदे स्थितोऽपि तथैव व्यवाहरत्।

कांग्रेससभायां, हिन्दुमहासभासु, सनातनधर्मपरिषत्सु, अन्यासु च समितिषु—सर्वत्रैव मदनमोहनः स्वीयेन भाषणेन सर्वान् अमोहयत्। पत्रकारकलासु चापि अयं प्रवीण आसीत्। अनेन पत्राणामपि सम्पादनं कृतम्।

देशस्य स्वतंत्रतायै बन्दिगृहम् अपि अयम् अगच्छत्। गोलमेज-परिषदि आंग्लदेशेऽपि महात्मना गाँधिमहोदयेन सह जगाम। कांग्रेससंस्थायाः काले काले विरोधमपि अकरोत्। किन्तु कष्टीये उपस्थिते सदा सहायतामेव अकरोत्। गाँधिमहात्मा एनमग्रजमिव मन्यते स्म। पंडितमोतीलालनेहरू—लालालाजपतराय—लोकमान्यतिलक—चित्तरञ्जनदासप्रभृतयः सर्वे एनं प्रियमित्रमिव पश्यन्ति स्म। कांग्रेसे च आरम्भत एव अस्य सक्रियः सहयोगोऽभवत्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समाजस्य हिन्दुजातेः धर्मस्य च उन्नत्यै आजीवनम् मालवीयमहोदयः यतितवान्। मनुष्याणां सेवा, विद्यायाः सेवा चास्य व्रतमासीत्। बहवः महाराजाः महाजनाश्चैनम् देवमिव पूजयन्ति स्म।

हिन्दीभाषायाः प्रचाराय उन्नत्यै च मालवीयमहोदयः निरन्तरं यतमानः आसीत्। एकस्य अपूर्वस्य महतो विश्वविद्यालयस्य स्थापनां कर्तुं मालवीयः छात्रावस्थायाम् एव संकल्पम् अकरोत्। काश्यां गंगायाः उपतटे काशी-विश्वविद्यालयस्य स्थापनामकरोत्। अयं विद्यालयः एतस्यैव तपसः त्यागस्य उदारतायाश्च फलम्। एतदर्थम् इमे एकैकमपि पणं जनेभ्यः वाञ्छितवन्तः। अयं निखिले संसारे अनुपमः विद्यालयः महामनसः अमरकीर्त्तिरेव वर्त्तते। यावच्च विश्वविद्यालयोऽस्ति तावत् सर्वे एनं मुहुर्मुहुः स्मरिष्यन्ति, यावच्चन्द्रदिवाकरौ विद्येते तावद् अस्य नाम स्थास्यति।

प्रश्नाः—मदनमोहनस्य जन्म कुत्र अभवत्। कुत्र अस्य शिक्षाऽभवत्। बाल्यादेव कस्य सेवां कर्तुम् अयम् ऐच्छत्। कथमयम् आंग्लभाषामपठत्। अन्यां च कां भाषाम् अधीतवान्। कुत्रायं धवलः आसीत्। केषां कल्याणचिन्तायां

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संलग्नः आसीत् । भाषणकलायामस्य का गतिरासीत् । विद्यार्थिभिः सह कथं व्यवाहरत् । कासु कासु संस्थासु अस्य योग आसीत् । कांग्रेसेन सह कः सम्बन्धोऽभूत् । विश्वविद्यालयः कस्यामरकीर्तिरिव वर्त्तते ।

अभ्यास

(१) संस्कृत में अनुवाद करो—मालवीयजी बड़े कोमल हृदय के थे । सबका कल्याण चाहते थे । गांधीजी भी समस्त संसार की भलाई चाहते थे । रवीन्द्रनाथ ठाकुर भी संसार के सब लोगोंको भाई मानते थे । पं० जवाहरलाल नेहरू भी आजकल विश्वकल्याण के लिए यत्न करते हैं ।

(२) मालवीयजी के सम्बन्ध में अपनी संस्कृत भाषा में पांच स्वतंत्र वाक्य लिखो ।

(३) उनके बारे में जो जानते हो उसे हिन्दी में लिखो ।

(४) सभा शब्दका रूप लिखो ।

व्याकरणम्

(१) शब्दरूपाणि—

नकारान्तो नपुंसकलिङ्गः नामन्-शब्दः

एक०	द्वि०	बहु०	
नाम	नामनी, नाम्नी	नामानि	(प्र०)
,,	,, ,,	,,	(द्वि०)
नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः	(तृ०)
नाम्ने	,,	नामभ्यः	(च०)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एक०	द्वि०	बहु०	
नाम्नः	नामभ्याम्	नामभ्यः	(पं०)
,,	नाम्नोः	नाम्नाम्	(ष०)
नाम्नि, नामनि	,,	नामसु	(स०)
हे नाम, हे नामन्	हे नाम्नी, हे नामनी	हे नामानि	(सं०)

(२) धातुरूपाणि—अनद्यतनभूते (लङ्)

	एक०	द्वि०	बहु०	
उप) विश्	उपाविशत्	उपाविशताम्	उपाविशन्	(प्र०)
	उपाविशः	उपाविशतम्	उपाविशत	(द्वि०)
	उपाविशम्	उपाविशाव	उपाविशाम	(तृ०)

नवमः पाठः

उपदेशामृतम्

पाठ्याः शब्दाः—वासयन्ति, सुमनसाम्, नम्राः, नवाम्बुभिः, कस्तूरिकागन्धः, विभाव्यते, दिशति, अपाकरोति ।

उद्यमः साहसं धैर्यं बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः ।
षडेते यत्र वर्त्तन्ते तत्र देवः सहायकृत् ॥१॥

अञ्जलिस्थानि पुष्पाणि वासयन्ति करद्वयम् ।
अहो सुमनसां प्रीतिः वामदक्षिणयोः समा ॥२॥

भवन्ति नम्रास्तरवः फलागमैः
नवाम्बुभिः भूरि विलम्बिनो घनाः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनुद्धतः सत्पुरुषः समृद्धिभिः
(भवती) स्वभाव: एवैष परोपकारिणाम् ॥३॥

यदि सन्ति गुणाः पुंसां विकसन्त्येव केवलम् ।
न हि कस्तूरिकागन्धः शपथेन विभाव्यते ॥४॥

खलः करोति दुर्वृत्तं साधुः प्राप्नोति तत्फलम् ।
दशाननोऽहरत् सीतां बन्धनं च पयोदधेः ॥५॥

जाड्यं धियो हरति, सिञ्चति वाचि सत्यम्
मानोन्नतिं दिशति, पापमपाकरोति ।
चेतः प्रसादयति, दिक्षु तनोति कीर्तिं
सत्सङ्गतिः कथय किन्न करोति पुंसाम् ॥६॥

पूज्यते यदपूज्योऽपि, यदगम्योपि गम्यते ।
वन्द्यते यदवन्द्यो पि, स प्रभावो धनस्य वै ॥७॥

स्वभावो नोपदेशेन शक्यते कर्त्तुमन्यथा ।
सुतप्तमपि पानीयं पुनर्गच्छति शीतताम् ॥८॥

मातेव रक्षति, पितेव हिते नियुङ्क्ते
कान्तेव चापि रमयत्यपनीय खेदम् ॥
लक्ष्मीं तनोति, वितनोति च दिक्षु कीर्तिम्
किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या ॥९॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शरदि न वर्षति गर्जति, वर्षति वर्षासु निःस्वनो मेघः ।
नीचो वदति न कुरुते, वदति न साधुः करोत्येव ॥ १० ॥

विद्या विवादाय धनं मदाय
शक्तिः परेषां परिपीडनाय ।
खलस्य, साधोः विपरीतमेतत्
ज्ञानाय, दानाय च रक्षणाय ॥ ११ ॥

प्रश्नाः---के षड् यत्र वर्त्तन्ते तत्र दैवः सहायतां करोति । सुमनसां प्रीतिः कथं व्यवहरति । तरवः कैः नम्राः भवन्ति । सत्पुरुषाः कैः अनुद्धताः भवन्ति । परोपकारिणां कः स्वभावः । यदि गुणाः सन्ति तर्हि किं भविष्यति । शपथेन किं न विभाव्यते । कः दुर्वृत्तं करोति । कश्च फलं प्राप्नोति । सत्सङ्गतिः किं किं पुंसां करोति । कः धनस्य प्रभावः अस्ति । स्वभावः केन अन्यथा कर्तुं न शक्यते । विद्या किं किं साधयति । कः वदति किन्तु न कुरुते । कः कुरुते किन्तु न वदति । साधोः खलस्य च किं किं विपरीतम् वर्त्तते ।

अभ्यास

(१) अपनी संस्कृत में उत्तर लिखो—

(क) सत्सङ्गति पुरुषों का क्या क्या नहीं करती ?

(ख) विद्या क्या क्या सिद्ध नहीं करती ?

(१), (२), (३) और (११) वें श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद करो ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(३) पयोदधि शब्द के रूप सभी विभक्तियों में लिखो ।
(४) 'विकसन्ति' के विधिलिङ् के रूप लिखो ।
[अध्यापक इस पाठ से कुछ श्लोक छात्रों को कण्ठस्थ कराएँ]

व्याकरणम्

(१) साहसं धैर्यम् = साहसम् + धैर्यम् । दुर्वृत्तं साधुः = दुर्वृत्तम् + साधुः । सीतां बन्धनम् = सीतां + बन्धनम् ।

नियमः—यदि पद के अन्त में 'म्' हो और उसके बाद कोई हल् व्यंजन रहे तो उस पदान्त 'म्' का अनुस्वार हो जाता है ; (मोऽनुस्वारः।)

(२) धातुरूपाणि—सामान्ये भविष्यति (लृट्)

एक०	द्वि०	बहु०	
स्था—स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति	(प्र०पु०)
स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ	(म०पु०)
स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः	(उ०पु०)
(उप)विश्—उपवेक्ष्यति	उपवेक्ष्यतः	उपवेक्ष्यन्ति	(प्र०पु०)
उपवेक्ष्यति	उपवेक्ष्यथः	उपवेक्ष्यथ	(म०पु०)
उपवेक्ष्यामि	उपवेक्ष्यावः	उपवेक्ष्यामः	(उ०पु०)

दशमः पाठः

प्रयागे कुम्भस्य पर्व

पाठ्याः शब्दाः—संगमस्नानम्, त्रिवेणीसंगमः, जनसंमर्दः, जनमेलनम्, अरुणम्., पर्व, सम्राजः, श्रूयते, आधुनिकी, भगिनी,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रयागे प्रतिवर्षं माघे मासि कृष्णे पक्षे अमावास्यायां तिथौ संगमस्नानं भवति।

तत्र गङ्गायमुनयोः सङ्गमो भवति। यमुना गङ्गायाः सहायिका नदी अस्ति। सा गङ्गां प्रयागे सङ्गच्छति। ततः द्वयोः नद्योः जलम् विन्ध्यक्षेत्रं काशीम् अन्यानि च नगराणि पवित्रीकुर्वत् समुद्रं गच्छति।

यद्यपि अधुना प्रयागे द्वे एव नद्यौ स्तः, किन्तु अस्य नाम पुराणेषु त्रिवेणिसङ्गमः वर्त्तते। द्वयोः वेण्योः एव साम्प्रतं दर्शनं भवति। न खलु एषा आधुनिकी वार्त्ता वर्त्तते, अपि तु कविकुलगुरोः कालिदासस्य कालेऽपि तत्र तिस्रः वेण्यः नासन्। तत्र रघुवंशेऽपि द्वयोः एव सितासितयोः वेण्योः वर्णनम् अस्ति। यमुनायाः जलम् असितमस्ति गङ्गायाश्च सितम्। श्रूयते पुराणादौ तृतीया नदी सरस्वती अत्र सङ्गमे आयाति स्म। तस्याः जलं किञ्चिदरुणमासीत्। सरस्वती भारतस्य अति प्राचीना नदी आसीत्। वेदेषु अपि तस्याः वर्णनं वर्त्तते। जनाः कथयन्ति—अद्यापि तस्याः जलहीनः नदीमार्गः राजस्थाने वर्त्तते।

अस्मिन् अवसरे यद्यपि प्रयागे प्रतिवर्षं महान् जनसंमर्दो भवति तथापि षड्वर्षानन्तरं द्वादशवर्षानन्तरं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

च विशेषतः अत्र जनमेलनम् भवति । इदं पर्वमेलनमपि अतीव प्राचीनं वर्तते । सम्राजः हर्षवर्धनस्य कालेऽपि एतस्य प्रसिद्धिः आसीत् । स्वयं सम्राट् तस्य च भगिनी राज्यश्रीः अपि इहागच्छतः स्म, दानादीनि च वितरतः स्म । गोस्वामितुलसिदासोऽपि प्रयागस्य वर्णनमकरोत् ।

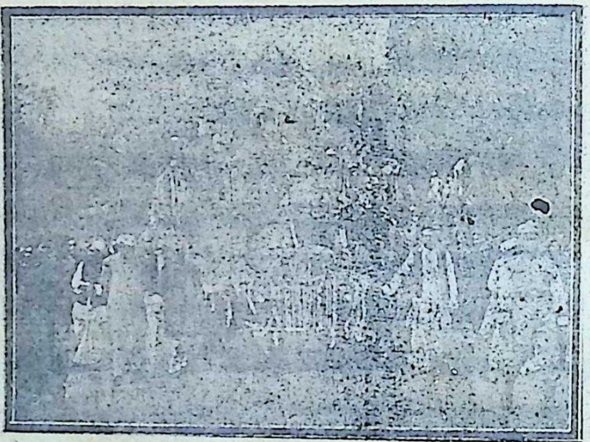

अस्मिन् पर्वणि भारतस्य सर्वेभ्यः भूभागेभ्यः जनाः आयान्ति । संन्यासिनश्च विशेषतः समायान्ति । भारतस्य विविधभागस्य यावन्तः संन्यासिनः, महात्मानः, महान्तः सत्पुरुषाः अत्र सङ्गीभवन्ति नान्यत्र कुत्रापि तस्य कथापि श्रूयते ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पटनिर्मितासु उपकारिकासु उटजेषु वा लोकाः वसन्ति। सहस्रशः आपणानि सर्वतः समायान्ति। धर्मोपदेशकाः अपि सङ्गी भवन्ति। सायंकाले विद्युद्दीपैः प्रकाशितेषु पटमण्डपेषु कथाः, उपदेशाः, व्याख्यानादीनि च श्रूयन्ते। विदुषां महात्मनाम् च दर्शनम् भवति। बहवः नराः नार्यश्च समस्ते माघमासे प्रयागे वसन्तः कल्पवासमाचरन्ति।

नास्ति एतादृशं किंचिदपि पुण्य विशिष्टं च पर्व, न वा तीर्थस्थानम्। अतएव प्रयागं तीर्थराजं कथयन्ति। अतः एव च १९४८ खीष्टीये वर्षे अत्र महात्मनः गांधिमहोदयस्यापि अस्थिभस्म त्रिवेण्याः पावने संगमजले विसर्जनाय समायात्। तदा महान् अभूतपूर्वः जनसंमर्दः तत्र भवति स्म। इमं तीर्थराजं समवाप्य हृदयं विश्रान्तिम् अनुभवति। धन्येयं पुण्यभूमिः यत्र महात्मानः स्वयमेव समागत्य स्वान् कृतकृत्यान् अनुभवन्ति।

प्रश्नाः—प्रयागे सङ्गमस्नानं कदा भवति। नद्योः जलं कुत्र याति। त्रिवेणीसङ्गमः कस्मात् कथ्यते। वेणीसंख्या तत्र का वर्त्तते। कालिदासः कयोः नद्योः वर्णनं कृतवान्। सरस्वत्याः नद्याः विषये किं जानासि। अस्याः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राचीनतमं वर्णनं कुत्रास्ति । प्रयागे कदा महान् जनसंमर्दो भवति । कतिवर्षानन्तरं कुम्भपर्व भवति । हर्षवर्द्धनः कस्मिन् पर्वणि प्रयागे आगच्छति स्म । गोस्वामितुलसिदासः स्वकीये रामचरितमानसे कस्य तीर्थस्य वर्णनम् अकरोत् । अत्र मुख्यतः के के आयान्ति । अत्र ते कुत्र निवसन्ति । किं किं तत्र भवति । कुत्र महात्मनः गांधिमहोदयस्य भस्मविसर्जनम् जातम् । कस्मादियं पुण्यतमा भूमिः ।

अभ्यास

(१) संस्कृत में अनुवाद करोः—

प्रयाग और काशी दो सबसे बड़े तीर्थ हैं । प्रयाग में माघमेला लगता है । हरद्वार में गंगादशहरा का मेला होता है । वहाँ बड़े-बड़े लोग दूर से आकर स्नान करते हैं । हरद्वार में गंगा-स्नान कर लोग दान देते हैं । काशी में जाकर लोग गंगा-स्नान करते हैं । गंगा-स्नान करके लोग विश्वनाथ का दर्शन करते हैं ।

(२) हिन्दी में अनुवाद करोः—

मानसरोवरं प्राप्य जनाः प्रसन्नाः भवन्ति । तत्र प्रकृतेः शोभां दृष्ट्वा हृदयं मोदते । परन्तु जलम् अतिशीतलं वर्त्तते । अतः गत्वापि बहवः जनाः स्नातुं नोत्सहन्ते । चन्द्रग्रहणावसरे काश्यां समागत्य अनेके पुरुषाः स्नान्ति । सूर्यग्रहणे पर्वणि कुरुक्षेत्रं गत्वा धर्मप्रियाः मज्जनं कुर्वन्ति ।

व्याकरणम्—गत्वा, समागत्य । पीत्वा, निपीय । दृष्ट्वा, दृश्य ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नियम—उपसर्ग आदि के धातु से पूर्व में रहने पर त्वा (इत्वा) के स्थान पर 'य' होता है। जैसे—भुक्त्वा; संभुज्य गत्वा, आगत्य।

निषेधार्थक 'अ' के रहने पर त्वा ही रह जाता है, जैसे—अगत्वा, अकृत्वा, अभुक्त्वा इत्यादि।

शब्दरूपाणि:—

इकारान्तः द्विवचनः द्विशब्दः

	पु०	स्त्री०	नपुं०
(प्र०)	द्वौ	द्वे	द्वे
(द्वि०)	,,	,,	,,
(तृ०)	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	(शेषंपुँल्लिङ्गवत्)
(च०)	,,	,,	
(पं०)	,,	,,	
(ष०)	द्वयोः	द्वयोः	
(स०)	,,	,,	

(२) इकारान्तः त्रिलिङ्गः बहुवचनान्तः त्रिशब्दः—

	पु०	स्त्री०	नपुं०
(प्र०)	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
(द्वि०)	त्रीन्	,,	,,
(तृ०)	त्रिभिः	तिसृभिः	शेषंपुंल्लिङ्गवत्।
(च०)	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	
(पं०)	,,	,,	
(ष०)	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	
(स०)	त्रिषु	तिसृषु	

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एकादशः पाठः

दिलीपस्य गोसेवा

पाठ्याः शब्दाः—नरपतिः, प्रणिधानेन, कामधेनुः, उपदिष्टवान्, गोमान्, निषीदति, आक्रन्दनम्, निषङ्गात्, अलम्, देवदारुम्, निवर्त्तयितुम्, क्षतात्, त्राणकरणम्।

इक्ष्वाकुवंशे जातः नरपतिः दिलीपः पत्नीसहितः सन्तानकामः आसीत्। स एकदा सायंकाले कुलगुरोः वशिष्ठस्य आश्रमं प्राप्तवान्। राजा गुरोः पादौ ववन्दे। आश्रमस्य निवासिनश्च तस्य स्वागतम् कृतवन्तः। अथ दिलीपः गुरुं सन्तानोपायं पृष्टवान्। महर्षिः वशिष्ठः प्रणिधानेन सन्तानाभावस्य कारणम् अबुध्यत। कामधेनोः शापजं च सन्तानाभावं ज्ञातवान्। तथा च गुरुः नन्दिनी-नामिकायाः स्वस्याः कामधेन्वाः सेवाम् उपदिष्टवान्।

इयं नन्दिनी वशिष्ठस्य कामधेनुः आसीत्। एतया वशिष्ठः गोमान् आसीत्। गोमतः वशिष्ठस्य आदेशम् श्रुत्वा स तस्याः सेवामारब्धवान्।

प्रातःकालादारभ्य सायंपर्यन्तं वनेवने तामनुसरन् राजा तस्याः सेवामकरोत्। सा यदि चलति स्म, दिलीपः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपि अचलत्, यदि सा स्थिराऽभवत् राजापि अतिष्ठत्, सा यदि निषीदति स्म, सम्राट् अपि निषण्णवान्, सा च यदा जलं आददाति स्म, दिलीपः जलमभिलषितवान् ।

एवं व्यतीते काले गोमतः वशिष्ठस्य सा धेनुः, एकदा परीक्षाम् अकरोत् ।

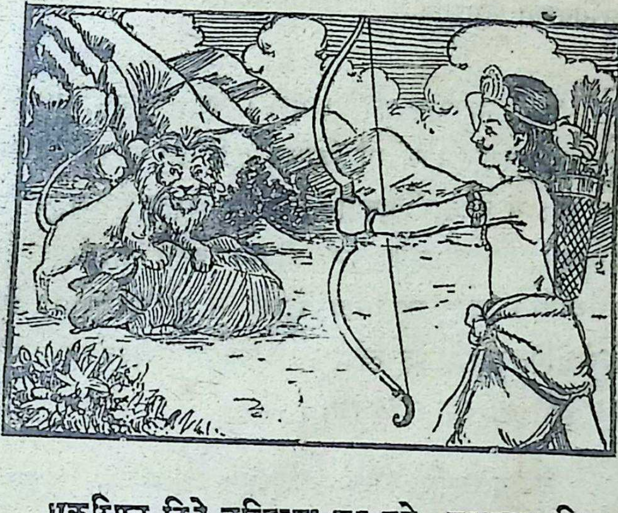

एकस्मिन् दिने नन्दिन्या सह वने महाराजः विचरन् आसीत् । तस्य लोचने वनशोभायाम् अनुरक्ते बभूवतुः सहसा दिलीपः नन्दिन्याः आक्रन्दनम् अशृणोत् । यावत् स ततः पश्यति तावत् सिंहेनाक्रान्तां धेनुं दृष्टवान् ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आश्चर्येण खेदेन च दिलीपः तथाभूतां नन्दिनीम् अपश्यत् । दृष्ट्वा च तस्य वधाय निषङ्गात् बाणमुद्धर्त्तुम् ऐच्छत् । किन्तु तस्य हस्तः बाणपुङ्खे यत्रासीत् तत्रैव अवतस्थे । तं चालयितुं सः अशक्तो बभूव । अपराधिने किंचित् कर्त्तुम् अशक्नुवन्तं तं स्वतेजः अदाहयत् ।

विस्मितस्य राज्ञः विस्मयम् अधिकं वर्धयन् सिंहः मनुष्यवाचा जगाद—

"अलं महीपाल तव श्रमेण । इतः प्रयुक्तमपि तव बलं वृथा स्यात् । त्वं मां किंचित् अपि कर्तुं न समर्थोऽसि । इमं पुरः यं देवदारुं पश्यसि, तस्या रक्षणार्थं शङ्करः मां नियुक्तवान् । अत्रागतान् जीवान् हत्वा भक्षयित्वा च वर्त्तयामि । मम क्षुधानिवारणाय स एव परमेश्वरः इमां धेनुं प्रेषितवान् । तत् त्वं लज्जां विहाय परावर्त्तस्व । नात्र तव दोषो भविष्यति ।" इति ।

दिलीपः कथितवान्—"शृणोतु नाम मे उपहास्यमपि वचनम् । यद्यपि देवदेवस्य शासनं मे मान्यमस्ति तथापि गुरोः धेनोः नाशं द्रष्टुं न पारयामि । अतः मदीयदेहेन शरीरवृत्तिं वर्त्तयितुं भवान् प्रसीदतु । त्यजतु चेमां गुरोः धेनुम् । दिनान्तेऽस्याः वत्सः उत्सुको भविष्यति ।" इति ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिंहोऽकथयत्—"राजन् त्वं मे विचारमूढ़ः प्रतिभासि। क्व तव एकच्छत्रं राज्यम्, नवं वयः, कान्तिमान् कायः, क्व च इयमेका वराकी गौः। अल्पस्य हेतोः किं विचार्य बहोः हानिं कर्त्तुम् उद्यतोऽसि।' इति।

राजा अवदत्—"मृगराज ! सत्यं भवतः वचः। किन्तु क्षतात् त्राणकरणम् एव क्षत्रियस्य धर्मो भवति, पीडितानां रक्षणमेव भूमिपतेः कर्त्तव्यं भवति। तत्र असमर्थस्य क्षत्रियस्य राज्ञो वा निन्दामलिनाः प्राणाः व्यर्थाः एव सन्ति। इयं च न सामान्या धेनुः। इयं कामधेनोः सदृशी एवास्ति।

"तस्मात् मे शरीरं भवान् भक्षयतु। तेन भवतः पारणा-विधेरपि निर्वाहो भविष्यति, गुरोश्च क्रियाः लुप्ताः न भविष्यन्ति। रक्षणीयं यत् तत् नाशयित्वा कथमहम् अक्षतः स्याम्। यदि च मयि भवान् दयालुः तर्हि मम यशः शरीरे कृपां करोतु। मम शरीरम् गृहीत्वा एनां मोचयतु भवान्" इति।

सिंहः तथेत्युक्त्वा स्वीचकार। राज्ञः बाणपुङ्खसक्तः बाहुः मुक्तोऽभवत्। सः स्वकायं तस्मै समर्पितवान्। अवाङ्मुखश्च यावत् सिंहस्य उत्पतनं प्रतीक्षते स्म तावत् विद्याधराणां हस्तैः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुक्ता पुष्पवृष्टिः तदुपरि पपात । नन्दिनी चावदत्–'उत्तिष्ठ वत्स' इति । तस्याश्चामृतायमानं वचनमाकर्ण्य उत्थितः सन् राजाऽपश्यत्—'अग्रतः जननीमिव स्थितां गामेव केवलाम् न तु सिंहम्' ।

धेनुश्च विस्मितं तं जगाद—मया स्वकीयया मायया त्वम् परीक्षितोऽसि । मां यमोऽपि प्रहर्त्तुं न शक्नोति किमुत सिंहादयः । प्रसन्नास्मि, तव गुरोः भक्तिं मयि च दयां दृष्ट्वा । तत् वरं वृणीष्व ।' इति ।

ततः दिलीपः स्वपत्न्यां सुदक्षिणायां कुलस्य कर्त्तारं पुत्रम् अयाचत । धेन्वाः गुरोश्च आदेशं प्राप्य वत्सावशिष्टं दुग्धं पीत्वा स्वमनोरथम् प्राप्तवान् ।

प्रश्नाः–दिलीपः कः आसीत् । कस्मिन् काले दिलीपः गुरोः आश्रमं गतवान् । सन्तानाभावस्य गुरुः किं कारणम् निर्दिष्टवान् । कमुपायं महर्षिः एनमुपादिशत् । कस्याः सेवां दिलीपः आरब्धवान् । धेनौ चलितायां स्थितायां वा कः चलति स्म तिष्ठति स्म वा । यदा वनस्य शोभायाः दर्शने राज्ञः लोचने संसक्ते आस्ताम् तदा किमभवत् । क्रन्दनं श्रुत्वा दिलीपः किम् अपश्यत् । कथं सः सिंहं हन्तुं न

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शक्नोति स्म। मनुष्यवाचा सिंहः किमवदत्। तद्वचनं श्रुत्वा दिलीपः किमकथयत्। सिंहाय महाराजः कथं विचारमूढः प्रतिभाति स्म। अन्ततः तस्याः रक्षायै कम् उपायं राजा निश्चितवान्। कदा पुष्पवृष्टिः पपात। नन्दिनी किमुक्तवती।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद करो :—

एकातपत्रं जगतः प्रभुत्वम्, नवं वयः कान्तमिदंवपुश्च।
अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन् विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम्॥
भक्त्या गुरौ, मय्यनुकम्पया च प्रीतास्मि ते पुत्र! वरं वृणीष्व।
न केवलानां पयसां प्रसूतिम् अवेहि मां कामदुघां प्रसन्नाम्॥

(२) संस्कृत में अनुवाद करो—

आप मेरे देह से अपनी शरीरवृत्ति निबाहिए (निर्वर्तयस्व)। अपने रक्ष्य की रक्षा मनुष्य करे। मनोरथ की सिद्धि के लिए आप गौ की सेवा करें। नन्दिनी की सेवा से आप मनोरथ पूर्ण करें। मेरे यश के शरीर पर आप कृपा करें।

(३) महर्षि और धेनु शब्द के रूप बताओ।

(४) 'दह्' धातु का अनद्यतन भूत में रूप लिखो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्याकरणम्—शब्दरूपाणि—

तकारान्तः (पुँल्लिङ्गः) गोमत्-शब्दः

एक०	द्वि०	बहु०	
गोमान्	गोमन्तौ	गोमन्तः	(प्र०)
गोमन्तम्	गोमन्तौ	गोमतः	(द्वि०)
गोमता	गोमद्भ्याम्	गोमद्भिः	(तृ०)
गोमते	,,	गोमद्भ्यः	(च०)
गोमतः	,,	,,	(पं०)
,,	गोमतोः	गोमताम्	(ष०)
गोमति	,,	गोमत्सु	(स०)
हे गोमन्	हे गोमन्तौ	हे गोमन्तः	(सं०)

द्वादशः पाठः

जन्तुशाला

पाठ्याः शब्दाः—जन्तुशालाम्, खरनखः, करालदंष्ट्रः, चतुष्पदेषु, पञ्जरबद्धः, भीतिम्, दन्तिनः, धौरेयाः, श्वानः, मुष्णन्ति, मकरन्दः, मिलिन्दाः ।

रामेश्वरः—(गुप्तेश्वरं संबोध्य) प्रिय मित्र ! अद्याहं जन्तुशालाम् गतवान् ।

गुप्तेश्वरः—किमर्थं जन्तुशालां त्वं गतः ।

रामेश्वरः—जन्तून् द्रष्टुमेवाहमगमम् । अन्यत् किम् ।

गुप्तेश्वरः—तत्र कान् जन्तून् त्वं दृष्टवान् ।

रामेश्वरः—अहम् बहून् जन्तून् दृष्टवानस्मि ।-वान्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सर्वान् वर्णयितुं न शक्नोमि। बहूनां तु नामापि न जानामि। विचित्राः विचित्राः पक्षिणः सन्ति, पशवः सन्ति, सर्पाः सन्ति, अन्यदपि न जाने किं किमस्ति।

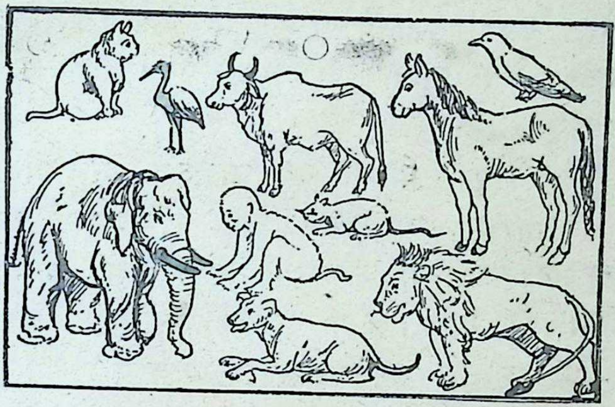

गुप्तेश्वरः—तथापि वर्णय किञ्चित्तत्रत्यं वृत्तान्तम्। यत् त्वं जानासि तेषां पशूनां वर्णनं कुरु। तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि परं कौतूहलं मम।

रामेश्वरः—श्रूयताम् यदि कौतूहलं वर्त्तते। अहम् सर्वतः प्रथमं सिंहं दृष्टवान्। खरनखः, करालदंष्ट्रः, ज्वलन्नेत्रः सः भयमुत्पादयति स्म। स सर्वेषु चतुष्पदेषु बलवत्तमः। सत्यमेव स मृगेन्द्रः।

ततश्च करिणो निरीक्षितवानस्मि। हस्ती च खलु पशुषु विशालतमः अस्ति। एकस्य गजस्य द्वौ दीर्घौ दन्तौ स्तः। अतएव गजाः दन्तिनः कथ्यन्ते।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुप्तेश्वरः—अहो ! चित्रमेतत्सर्वम् । किं घोटका अपि तत्र सन्ति ।

रामेश्वरः—आम् । अश्वान् अपि दृष्टवान् । तत्र पारसीकाः, काम्बोजाः अन्ये च विविधाः प्रकाराः अश्वानाम् आसन् । केचन घोटकाः रथहारकाः, केचन चाश्ववारहारकाः अभूवन् ।

गुप्तेश्वरः—घोटकाः इव गावोऽपि भविष्यन्ति ।

रामेश्वरः—अथ किम् । गावः वृषभादयश्चापि तत्रासन् । कपिलाः गावः, कृष्णा गावः विविधप्रकाराः अन्याश्च गावः तत्र सन्ति । दृढाः पुष्टाङ्गाः धौरेयाश्च वृषभाः सन्ति, हलकर्षणे समर्थाः भारवहने शक्ताश्च । गावोऽपि दुग्धवत्यः तत्र विद्यन्ते ।

गुप्तेश्वरः—गावस्तु मह्यं बहु रोचन्ते । कुक्कुराः अपि रोचन्ते ।

रामेश्वरः—स्वामिभक्ताः कुक्कुराः अपि नानादेशीयाः नानाजातीयाश्च तत्र वर्त्तन्ते, लघवः, अलघवः, क्षीणाङ्गाः, पुष्टाङ्गाश्च श्वानः चौरान् दृष्ट्वा बुक्कन्ति ।

कुत्ते

बिडालं चाहं दृष्टवान् । मार्जाराः सदा भोजनान्येव गवेषयन्ति ।

मूषकाश्चापि तत्रैव आसन् । पञ्जरे स्थितादपि मार्जारात् ते बिभ्यन्ति ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुप्तेश्वरः—मूषकस्तु मह्यं न रोचते। दन्तकर्त्तरिकया बहूनि वस्तूनि एष विनाशयति।

रामेश्वरः—तत्तु सत्यं वर्त्तते। अन्यदपि करोति। चौर्ये मूषकाः अतिनिपुणाः भवन्ति। वस्तूनि मुष्णन्ति अतएव ते मूषकाः। अहो! वानरस्य वृत्तान्तं तु नाहं कथितवान्। एकः मर्कटः तत्र बहुप्रकाराः क्रीडाः प्रदर्शितवान्। अन्ये च बहवः रक्तमुखाः, कृष्णमुखाः, लाङ्गूलिनः, वन्यमानुषाश्च तत्रासन्।

गुप्तेश्वरः—कान् कान् पक्षिणः त्वं दृष्टवान्।

रामेश्वरः—पक्षिणस्तु तत्र इयन्तः सन्ति येषां नामगणनामपि कर्तुं न पारयिष्यामि। शुकाः विशेषतः बहुविधाः सन्ति।

'का-का' इति रटन्तः काकाः सन्ति, मत्स्यान् ग्रहीतुं ध्यानपराः बकाश्चापि सन्ति।

मधु सञ्चयन्तः मधुकराः, भृशं कूजन्तः कोकिलाः, मकरन्दं पिबन्तः मिलिन्दाश्चापि आसन्। मधुकर

नहि सर्वं वर्णनं कर्तुं शक्नोमि। श्वः मया सह स्वयमेव तत्र चल, स्वयं च सर्वं पश्य।

प्रश्नाः—रामेश्वरः सिंहस्य विषये किम् अकथयत्। तत्कथनानुसारेण कः पशुः बलवत्तमः भवति कश्च विशालतमः भवति। पारसीकः कः पशुः प्रसिद्धः अस्ति। कः वृषभः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धौरेयः कथ्यते। श्वापदेषु कः स्वामिभक्तः भवति। बिडालाः नित्यं किं कुर्वन्ति। मूषकाः गुप्तेश्वराय कथं न रोचन्ते। कतिविधान् वानरान् त्वं जानासि, वर्णय।

अभ्यास

(१) यान् पशून् श्वापदान् पक्षिणः वा त्वं जानासि तान् स्वसंस्कृतेन वर्णय।

(२) गोमत् शब्दके समान चलनेवाले धीमत् शब्दके रूप सब विभक्तियों में लिखो।

व्याकरणम्

किञ्चित्तत्रत्यम् = किञ्चित् + तत्रत्यम्, तत्पशूनाम् = तद् + पशूनाम्। सुहृत्कथनम् = सुहृद् + कथनम्।

नियमः—(१) यदि क् ख् ग् घ् च् छ् ज् झ् ट् ठ् ड् ढ् त् थ् द् ध् प् फ् ब् भ्, स् श् ष् और ह् (इन्हें 'झल' कहते हैं) के बाद क् ख् च् छ् ट् ठ् त् थ् प् फ् स् ष् श् (इन्हें खर् कहते हैं) आवें तो वर्गानुसार क् च् ट् त् प् (इन्हें चर् कहते हैं) होते हैं। [खरिच—खरि परे झलां चरः स्युः।]

(१) कर्तृवाच्यभूतकृदन्तस्य रूपाणि।

गतवान्—गतवत् शब्दस्य प्रथमायां रूपम्। एवं कथितवान्, पठितवान् इत्यादयोऽपि कथितवत्—पठितवत्–प्रभृतीनां सन्ति। कृतवती च कृतवती शब्दस्य।

गतवत् = ग (म्) + तवत्, कृतवत् = कृ + तवत्, पठितवत् = पठ् + इतवत्, चलितवत् = चल् + इतवत्।

नियमः—कर्तृवाच्य भूत कृदन्त के रूप धातु से तवत् या इतवत् लगाकर बनाए जाते हैं, जैसे गदितवान्, श्रुतवान् इत्यादि।

तुलना करो—कथितः, पठितः, चलितः, कृतः। कर्मवाच्य (या भाववाच्य) भूतकृदन्त के रूप त या इत लगाकर बनते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रयोदशः पाठः

भगवान् बुद्धः

पाठ्याः शब्दाः—सार्द्धद्विसहस्राब्दात्, चिन्तनशीलः, विरक्तिम्, रूपवती, महाभिनिष्क्रमणम्, उपलब्धिः, विहारेषु, सुखोपभोगस्य उपकरणे, भोगपराङ्मुखः, उपायानुसंधाने, सम्यक्, बुद्धत्वम्।

इतः सार्धद्विसहस्राब्दीतः (२५०० वर्षेभ्यः) ततोऽपि अधिकं वा पूर्वं कपिलवस्तुनगरे गौतमबुद्धस्य जन्म अभवत्। अस्य पिता कपिलवस्तुनगरस्य राजा शुद्धोदनः आसीत्। बाल्येऽस्य नाम सिद्धार्थः आसीत्।

बाल्यादेव सिद्धार्थः चिन्तनशीलोऽभवत्। संसारात् आरम्भतः एव तस्य विरक्तिं दृष्ट्वा अस्य पित्रा सिद्धार्थस्य रूपवत्या कन्यकया सह विवाहः कृतः। अस्य पत्नी यशोधरा नाम अतीव सुन्दरी गुणशीला चासीत्। सत्यपि सर्वस्मिन् सुखोपभोगस्य उपकरणे सिद्धार्थः भोगपराङ्मुख आसीत्। अस्य पुत्रः राहुलो नाम बभूव।

नगर-विचरणे दुःखिनं पीडितं, रोगवन्तं च दृष्ट्वा सिद्धार्थः भृशं दुःखितो बभूव। संसारे सर्वतः व्याप्तं दुःखं दृष्ट्वा तस्मात् मोचनस्य उपायानुसन्धाने अयम् चिन्तापरो बभूव।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एकदा चाकस्मात् सुप्तां भार्यां पुत्रं च विहाय महाभिनिष्क्रमणं चकार। कतिचिदस्य दिनानि साधुसंसर्गे व्यतीतानि। किन्तु तत्र ज्ञानस्योपलब्धिः नाभवत्। द्वादश वर्षाणि कठोरं तपः आचचार। ततोऽपि शान्तिं नाप।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्ततः बोधगयायाम् पिप्पलवृक्षस्य अधस्तात् चिन्तनशीलोऽयं सम्यक् बुद्धत्वं प्राप्तवान् । ज्ञानप्राप्तेरनन्तरमेवास्य-नाम बुद्धोऽभूत् ।

काश्यां अधुना सारनाथ विश्रुते मृगदावे सः निजोपदेशस्य प्रथमं प्रचारमकरोत् । अनेकेऽस्य शिष्याः अभवन् । इत्थं च अनेकवर्षाणि उपदेशं दत्वा अशीतिवर्षावस्थायाम् कुशीनगरे देहं त्यक्तवान् ।

अयं भगवान् गौतमोऽस्माकं दशावतारेषु नवमः । सम्प्रति भारते बौद्धधर्मस्य प्रचाराभावेऽपि एशिया-भूखण्डस्य सर्वे प्राच्याः देशाः अस्यैव धर्मे दीक्षिताः सन्ति । स्याम-चीन-जापान-लङ्का-तिब्बतादि-प्रदेशेषु अस्य धर्मस्य महान् प्रचारो वर्त्तते ।

भगवतः बुद्धस्योपदेशस्य अयमेव सारः—यन्मनुष्याः प्राणिमात्रेषु अहिंसया वर्त्तयेयुः, सर्वेषु दयां कुर्युः, मातापित्रोः गुरुजनस्याज्ञां पालयेयुः, सर्वान् प्रति स्नेहं प्रकटयेयुः, सर्वेषां सेवां कुर्युः । सत्यं वदेयुः । यज्ञादिहिंसापूर्णानि कर्माणि त्यक्त्वा सर्वान् प्रति समतां वर्त्तयेयुः ।

तदनुसारेण सदाचार एव सर्वेषां धर्माणां मूलम् । ईर्ष्यां द्वेषं चौर्यं विषयोपभोगांश्च विहाय मध्यमेन मार्गेण गच्छेयुः ।

५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गौतमः कथितवान् यत् नास्ति जातिगतो भेदः कश्चित् ।

यः शोभनं कर्म आचरति सः आदरणीयः स्यात् । यश्च हीनानि कर्माणि करोति सः हीनो भवेत् ।

स्थाने स्थाने तस्य शिष्याः बौद्धधर्मस्य प्रचारं कृतवन्तः । ते भिक्षवः (भिक्खवः) कथ्यन्ते । बौद्धानां ग्रन्थाः पालिभाषायां सन्ति । इमे भिक्षवः भिक्षुदीक्षां गृहीत्वा गृहादीनि त्यक्त्वा विहारेषु निवासं कृतवन्तः ।

मगधसम्राट् अशोकः अपि बौद्धोऽभवत् । देशे विदेशे च धर्मस्यास्य प्रचाराय स बहून् भिक्षून् प्रेषितवान् । हर्षवर्द्धनोऽपि बौद्धः आसीत् । इत्थं च अयम् एव धर्मः अद्यापि सर्वेषु धर्मेषु उत्तमः कथ्यते ।

धन्या च भारतभूमिः या गौतमबुद्धम् एनं प्रसूतवती । या च महात्मानं गाँधिमहोदयं जनितवती ।

प्रश्नाः—कियत् पूर्वं भगवान् बुद्ध आसीत् । कुत्रायं राज्यमकरोत् । कया सह सिद्धार्थस्य विवाहोऽभवत् । किन्नाम्नी अस्य पत्नी आसीत् । कः भोगपराङ्मुखः अभवत् । किं किं विहाय सिद्धार्थः महाभिनिष्क्रमणं चकार । तपस्यायाः किं फलमलभत गौतमः । कुत्र अस्य ज्ञानोपलब्धि अभवत् । कुत्रायम् उपदेशस्य प्रथमं प्रचारं अकरोत् । कुत्र कुत्र बौद्धधर्मस्यानुयायिनः सन्ति । बुद्धस्य के के उपदेशाः ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अभ्यास

(१) भगवतो बुद्धस्योपदेशाः स्वीयसंस्कृतभाषायाम् वर्णनीयाः।

(२) हिन्दी में अनुवाद करो:—

बौद्धधर्मस्याद्यापि अनुयायिनः कदाचित् सर्वतोऽधिकाः सन्ति। हिंसां कदापि न कुर्यात्। सर्वान् प्राणिनः प्रति सदा प्रेम्णा तिष्ठेत्। देवान् गुरूँश्च श्रद्धया उपतिष्ठेत। पवित्रेण मनसा निर्जने स्थाने उपविशेत्। मातापित्रोः वचनानि श्रद्धया शृणुयात्। सत्यमनुसरतः स्वात्मनः आज्ञां शृणुयात्। मधु न पिबेत्। अन्यानि च मादकद्रव्याणि न सेवेत। मधुना बुद्धिः नश्यति।

(३) इस पाठ में प्रयुक्त कर्तृवाच्य भूतकृदन्त के रूपों का निर्देश कीजिए।

व्याकरणम्

(१) शब्दरूपाणि—

एक०	द्वि०	बहु०	
मधु	मधुनी	मधूनि	(प्र०)
,,	,,	,,	(द्वि०)
मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः	(तृ०)
मधुने	,,	मधुभ्यः	(च०)
मधुनः	,,	,,	(पं०)
,,	मधुनोः	मधूनाम्	(ष०)
मधुनि	,,	मधुषु	(स०)
हे मधो, हे मधु	हे मधुनी	हे मधूनि	(सं०)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धातुरूपाणि—विधौ (लिङ्)

	एक०	द्वि०	बहु०	
स्था (तिष्ठ्)—	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः	(प्र०पु०)
	तिष्ठेः	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत	(म०पु०)
	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम	(उ०पु०)

कृ (कर्)—

परस्मैपदम्—	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः	(प्र० पु०)
	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात	(म० पु०)
	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम	(उ० पु०)

आत्मनेपदम्—

कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्	(प्र० पु०)
कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्	(म० पु०)
कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि	(उ० पु०)

(उप) विश्—उपविशेत्		उपविशेताम्	उपविशेयुः	(प्र० पु०)
	उपविशेः	उपविशेतम्	उपविशेत	(म० पु०)
	उपविशेयम्	उपविशेव	उपविशेम	(उ० पु०)

श्रु (शृ)	शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः
	शृणुयाः	शृणुयातम्	शृणुयात
	शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चतुर्दशः पाठः

देव्याः दूतस्य च संवादः

प्रेषितः, त्वत्सकाशम्, अव्याहताज्ञः, देवयोनिषु, निर्जिताखिलदैत्यारिः, रत्नम्, मत्परिग्रहात्, परमैश्वर्यम्, उदितम्, व्यपोहति, गम्भीरान्तःस्मिता, जगौ।

दूत उवाच

देवि ! दैत्येश्वरः शुम्भः त्रैलोक्ये परमेश्वरः।
दूतोऽहं प्रेषितस्तेन त्वत्सकाशमिहागतः॥
अव्याहताज्ञः सर्वासु यः सदा देवयोनिषु।
निर्जिताखिलदैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत्॥
मम त्रैलोक्यमखिलं मम देवा वशानुगाः।
यज्ञभागान् अहं सर्वान् उपाश्नामि पृथक् पृथक्॥
त्रैलोक्ये वररत्नानि मम वश्यान्यशेषतः।
रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने॥
स्त्रीरत्नभूतां त्वां देवि ! लोके मन्यामहे वयम्।
सा त्वमस्मान् उपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम्॥
परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यसे मत्परिग्रहात्।
एतद्बुध्या समालोच्य मत्परिग्रहतां भज॥ ([illegible]ज)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इत्युक्त्वा

ऋषिरुवाच

इत्युक्त्वा सा तदा देवी गम्भीरान्तःस्मिता जगौ ।
दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत् ॥ ✓

देव्युवाच

सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किंचित्त्वयोदितम् ।
त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृशः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रूयतामल्पबुद्धित्वात्

किन्त्वत्र यत् प्रतिज्ञातं मिथ्या तत् क्रियते कथम् ।
श्रूयतामल्पबुद्धित्वात् प्रतिज्ञा या कृता पुरा ॥
यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति ।
यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्त्ता भविष्यति ॥
तदा गच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वाऽपराजितः ।
मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणिं गृह्णातु मे लघु ॥

प्रश्नाः—कः दूतं प्रेषितवान् । देवेषु कः अव्याहताज्ञः आसीत् । कः अखिलान् दैत्यारीन् निर्जितवान् । कः यज्ञभागान् सर्वान् उपाश्नाति । कस्य वश्यानि सर्वाणि रत्नभूतानि । कस्मात् कारणात् शुम्भः भगवतीं समिच्छति । का रत्नभूता स्त्रीणाम् । दैत्यपरिग्रहात् दूतानुसारेण देवी किं प्राप्स्यसि । केनेयं जगत् धार्यते । भगवती दूतस्य कथनं कस्मात् न स्वीकरोति । तत् स्वीकारेण किम् मिथ्या क्रियते । का देव्याः प्रतिज्ञाऽस्ति ।

अभ्यास

(१) हिन्दी में अनुवाद करोः—यानि रत्नानि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो । त्रैलोक्ये तु समस्तानि साम्प्रतं भान्ति ते गृहे ॥ एवं दैत्येन्द्र ! रत्नानि साम्प्रतं भान्ति ते गृहे । स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते ॥ नैव तादृक् क्वचिद् रूपं दृष्टं केनचिदुत्तमम् । ज्ञायतां काप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरेश्वर ।

(२) संस्कृत में अनुवाद करो—देवी की बात सुनकर दैत्यराज क्रुद्ध हुआ । उसने अपनी सेना लड़ने के लिए भेजी । देवी ने चण्ड-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुण्ड को पराजित किया। रक्तबीज दैत्य को भी काली ने पहले रक्तरहित किया, पुनः उसका भी वध किया। तदनन्तर निशुम्भ और शुम्भ को भी मार डाला। इस प्रकार संसार से दैत्यों का अत्याचार देवी ने समाप्त किया।

[अध्यापक कर्मवाच्य के रूप बनवाने का प्रयत्न करें। भूतकृदन्त के प्रयोग का प्रयत्न छात्रों से कराएँ।]

व्याकरणम्—तुलना करो—तेन अहं दूतः प्रेषितः। सः मां दूतं प्रेषितवान्। त्वया सत्यम् उक्तम्। त्वं सत्यमुक्तवान्। त्वया किञ्चित् मिथ्या नोदितम्। त्वं किंचित् मिथ्यां नोदितवान्।

नियमः—कर्मवाच्य के वाक्यों में कर्त्ता तृतीया में रहता है, कर्म प्रथमा में तथा क्रियापद कर्मवाच्य का रहता है। कर्तृवाच्य में कर्त्ता प्रथमा में और कर्म द्वितीया में रहता है तथा क्रियापद कर्मवाच्य का होता है। भुक्तः, उक्तः, प्रेषितः आदि कर्मवाच्य के रूप हैं। कृतवान्, भुक्तवान्, उक्तवान्, प्रेषितवान् आदि कर्तृवाच्य के रूप हैं।

(२) धातुरूपाणि—

प्रवर्त्तनायाम् (लोट्)

	एक०	द्वि०	बहु०	
स्था (तिष्ठ्)	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु	(प्र०पु०)
	तिष्ठ	तिष्ठतम्	तिष्ठत	(म०पु०)
	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम	(उ०पु०)

	एक०	द्वि०	बहु०	
श्रु (शृ)	शृणोतु	शृणुताम्	शृण्वन्तु	(प्र०पु०)
	शृणु	शृणुतम्	शृणुत	(म०पु०)
	शृणवानि	शृणुवाव	शृणुवाम	(उ०पु०)

	एक०	द्वि०	बहु०	
कृ (कर्) परस्मैपद	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु	(प्र०पु०)
	कुरु	कुरुतम्	कुरुत	(म०पु०)
	करवाणि	करवाव	करवाम	(उ०पु०)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आत्मनेपदम्

कृ (कर्) आत्मनेपदम्	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
	करवै	करवावहै	करवामहै

(उप) विश्	उपविशतु	उपविशताम्	उपविशन्तु (प्र० पु०)
	उपविश	उपविशतम्	उपविशत (म० पु०)
	उपविशानि	उपविशाव	उपविशाम। (उ० पु०)

पञ्चदशः पाठः

महाराणाप्रतापः

पाठ्याः शब्दाः—विपुलांसः, पीनवक्षाः, अन्तर्भावयितुम्, महीयसाम्, अपरिमितम्, अपरिमेयानि, दारुणतमानि, पल्यङ्के, अनुनयेन।

विदितमेव, सर्वेषां मेवाडकेसरिणाम् स महाराणाप्रताप-महोदयानाम् नाम। अयं वीरवरः चित्रपुरस्य (चित्तौड़स्य) राज्ञः उदयसिंहस्य पुत्रः आसीत्। महाराणाप्रतापः महान् वीरः निर्भयश्च बभूव। विपुलांसः, महाबाहुः, पीनवक्षाः, दृढाङ्गः प्रतापः यथा शरीरेण पुष्टः अभवत् तथैव हृदयेनापि वीरः अभूत्। नास्य कश्चिदपि प्राणानां मोहः आसीत्।

मुगलसम्राट् अकबरनामाऽपि तदैव राज्यमकरोत्। स खलु समस्ते भारते दृढं साम्राज्यं स्थापयितुमैच्छत्। महाराणा-प्रतापस्य राज्यमपि स्वस्य राज्ये अन्तर्भावयितुम् इच्छति स्म। तदपि च न प्रार्थनया, नानुनयेन अपितु शस्त्रबलेन।

महाराणाप्रतापाय एतदसम्भवोऽभूत्। प्रकृतिः खलु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सा महीयसां यदन्यस्य प्रभुत्वं ते न सहन्ते। अतः स्वस्याः

स्वतन्त्रतायाः अपहरणं तस्मै सह्यं न भवति स्म। द्वयोः युद्धम् आरभत।

अकबरराजस्य समीपे महती सेना, अपरिमितं धनम्, अगणिताः जनाः, अन्यानि च युद्धस्य अपरिमेयानि उपकरणानि आसन्, राज्यस्य सकला शक्तिः अभूत्। परन्तु महाराणाप्रतापस्य सहायकाः परिगणिताः देशसेवकाः राजपुत्राः एव आसन्।

किन्तु तेषां महाराणाप्रतापस्य च दृढो निश्चयः आसीत्— कार्यं वा साधयामि, शरीरं वा पातयामि। प्राणाः तिष्ठन्तु शरीरेषु गच्छन्तु वा ततः, किन्तु यावज्जीवनं देशस्य स्वतन्त्रता रक्षणीया एव। एतदर्थं च प्रतापः मरणपर्यन्तमयतत। ✓

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुगलसेनया सह युद्धे विविधानि दारुणतमानि कष्टानि सः सहते स्म, गिरिगुहासु भ्राम्यति स्म, वनंवनमटति स्म, भोजनं विनैव न जाने कति दिनानि गतानि बभूवुः, राज्यं नष्टमभवत्, सहायाः युद्धे घातिताः आसन्, भार्या, सन्ततिः, कुटुम्बिनश्च असह्यानि कष्टानि असहन्त। घासस्य रोटिकाः तस्य सन्ततयः अभक्षयन्। एवं कष्टानि सहमानः देशस्य स्वतन्त्रतायै प्रतापः यावज्जीवनं कष्टैः सह युद्धं करोति स्म।

'हल्दीघाटी'–स्थले तस्य महत्प्रसिद्धं युद्धमभवत्। राजपुत्रीयानां सैनिकैः तत्र प्रदर्शिता वीरता, तत्र अनुष्ठितः त्यागश्च सदा स्वर्णाक्षरैः लिखितौ वर्त्तेते।

महाराणाप्रतापस्य अनुयायिषु केचन तदर्थं प्राणान् अत्यजन्, केचन धनानि समर्पयन्ति स्म, केचन च तेनैव सह वने वने गिरौ गिरौ बभ्रमुः।

अन्तकाले च प्रतापः मन्त्रिभामाशाहदत्तैः धनैः सैन्य-संग्रहं विधाय अयुध्यत, अनेकान् च प्रदेशान् विजितवान्, किन्तु मेवाडप्रदेशं न प्राप्तवान्। तदर्थं च तस्य प्रतिज्ञा आसीत्–मेवाडविजयं विना पल्यङ्के न शयनं करिष्यामि, न वा धातुभोजनपात्रे खादिष्यामि। स तु जीवनपर्यंतं तां पालितवान्, तद्वंशजाः अद्यापि तां पालयन्ति। धन्येयं भारतभूमिः, यत्र एवं वीरचरिताः जाताः, धन्याश्च वयं यत् तत्र जन्मानि प्राप्तवन्तः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रश्नाः—महाराणाप्रतापः कस्य पुत्र आसीत्। तस्य पिता कस्य प्रदेशस्य राजा अभवत्। तस्य शरीरं कीदृशम् आसीत्। मुगलसम्राजा सह तस्य युद्धम् कस्मादभवत्। अकबरमहोदयस्य सकाशे किं किमासीत्। प्रतापस्य सहायकाः कीदृशाः आसन्। प्रतापस्य तत्सहायकानां च को निश्चयः आसीत्। कानि कष्टानि प्रतापः सहते स्म। कुत्र तस्य सर्वप्रसिद्धम् युद्धमभवत्। तत्र के वीरतां प्रदर्शयन्ति स्म। तदनुयायिनः किं किमकुर्वन्। भामाशाहः किमकरोत्। तस्य धनेन प्रतापः किमकरोत्। कस्मादियं भूमिः धन्या वर्त्तते।

अभ्यास—

(१) संस्कृत में अनुवाद करो—महाराणाप्रताप के भाई (भ्राता) शक्तिसिंह थे। प्रताप से लड़कर अकबर के यहाँ चले गए। भाई-भाई के युद्ध में पुरोहित की मृत्यु हुई। शक्तिसिंह हल्दीघाटी के युद्ध में शत्रुपक्ष से आए थे। झालानायक ने अपने प्राणों को दे दिया। प्रताप के प्राणों की रक्षा की। अकबर के यहाँ पृथ्वीराज थे। वे भी हृदय से सदा राजपूतों की विजय चाहते थे।

(२) सन्धि-विच्छेद करो—निर्भयश्च। हृदयेनापि। यावज्जीवनम्। नष्टमभवत्। कुटुम्बिनश्च। नानुनयेन।

(३) सन्धिकरो—उपकरणानि + आसन् + राज्ये + अन्तर्भावयितुम्। एव + आसन्। कष्टानि + असहन्त।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्याकरणम्

कश्चिदपि = कश्चित् + अपि
तदपि = तत् + अपि
एतदसह्यम् = एतत् + असह्यम्
यदन्यस्य = यत् + अन्यस्य
तद्वंशजाः = तत् + वंशजाः
एवं-वागीशः, अजन्तः, अप् + जम् = अब्जम्—आदयोपि ।

नियमः

क्, ख्, ग्, घ्, च्, छ्, ज्, झ्, ट्, ठ्, ड्, ढ्, त्, थ्, द्, ध्, प्, फ्, ब्, भ्, के बाद स्वरों के आने पर अथवा ग्, घ्, ज्, झ्, ड्, ढ्, द्, ध्, ब्, भ्, के आने पर वर्ग के क्रमानुसार उनका ग्, ज्, ड्, द्, ब् हो जाता है (झलां जशोऽन्ते)

शब्दरूपाणि

मकारान्तः त्रिलिङ्गः किम्-शब्द :—

पुँल्लिङ्गम्

एक०	द्वि०	ब०	
कः	कौ	के	(प्र०)
कम्	,,	कान्	(द्वि०)
केन	काभ्याम्	कैः	(तृ०)
कस्मै	,,	केभ्यः	(च०)
कस्मात्	,,	,,	(पं०)
कस्य	कयोः	केषाम्	(ष०)
कस्मिन्	,,	केषु	(स०)

स्त्रीलिङ्गम्

का	के	काः	(प्र०)
काम्	,,	,,	(द्वि०)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एक०	द्वि०	बहु०	
कया	काभ्याम्	काभिः	(तृ०)
कस्यै	,,	काभ्यः	(च०)
कस्याः	,,	,,	(पं०)
,,	कयोः	कासाम्	(ष०)
कस्याम्	,,	कासु	(स०)

नपुंसकलिङ्गम्

किम्	के	कानि	(प्र०)
,,	,,	,,	(द्वि०)

शेषं पुँल्लिङ्गवत्—

नीतिशिक्षणम्

आरभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः,
प्रारभ्य विघ्नविहिता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः सहस्रगुणितैरपि हन्यमानाः,
प्रारब्धमुत्तमगुणा न परित्यजन्ति ॥ १ ॥
यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः
स पण्डितः सः श्रुतवान् गुणज्ञः।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः
सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति ॥ २ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण
लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात् ।
दिनस्य पूर्वार्द्धपरार्धभिन्ना,
छायेव मैत्री खलसज्जनानाम् ॥ ३ ॥
श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन
दानेन पाणिर्नतु कङ्कणेन ।
विभाति कायः करुणामयानां
परोपकारेण न चन्दनेन ॥ ४ ॥
भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः,
तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः ॥
कालो न यातो वयमेव याताः
तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः ॥ ५ ॥
महेश्वरे वा जगतामधीश्वरे
जनार्दने वा जगदान्तरात्मनि
तयोर्न भेदप्रतिपत्तिरस्ति मे
तथापि भक्तिस्तरुणेन्दुशेखरे ॥ ६ ॥
[जाड्यं धिय इत्यादि पूर्वमेव आयातम्]

गीतोपदेशः

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्म फलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥
योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनञ्जय !
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥
दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनञ्जय !
बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ॥
बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते ।
तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् ॥
कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः ।
जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति ।
समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि ।।

अर्जुन उवाच—

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव ।
स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् ।।

श्रीभगवान् उवाच—

प्रजहाति यदा कामान् सर्वान्पार्थ मनोगतान् ।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ।।
दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः ।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ।।
यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।।

स्तुतिश्लोकाः

शुद्धां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीम्
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम् ।।
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ।
यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो,
बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्तेति नैयायिकाः ।।
अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः
सोऽयं नो विदधातु वाञ्छितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः ।।
कल्याणानां निधानं कलिमलमथनं पावनं पावनानाम्
पाथेयं यन्मुमुक्षोः सपदि परपदप्राप्तये प्रस्थितस्य ।
विश्रामस्थानमेकं कविवरवचसां सद्‌गतिः सज्जनानां
बीजं धर्मद्रुमाणां प्रभवतु भवतां भूतये रामनाम ।।

दुर्गेस्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कागज का आकार $\frac{२० \times ३०}{१६}$ ......२४ पौण्ड

कवर का कागज—६० पौण्ड

कागज—न्यूजप्रिण्ट व्हैट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu